सितम्बर- 2024, वर्ष 33, अंक 62

उत्तर प्रदेश संदेश

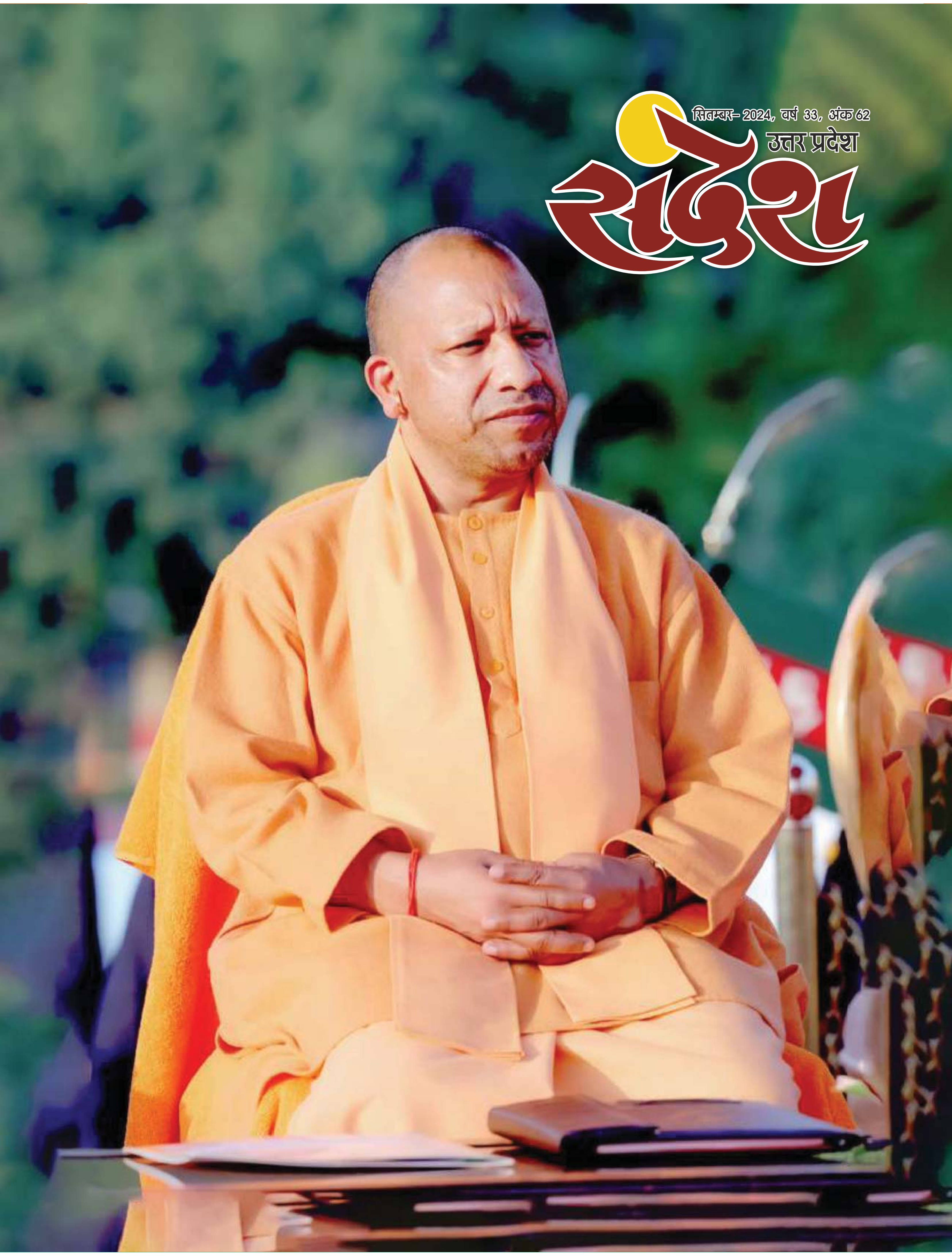

जन सहभागिता से
ग्राम्य विकास

उत्तर प्रदेश मातृभूमि योजना

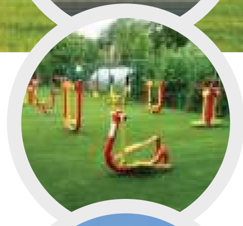

विवरण

- उत्तर प्रदेश मातृभूमि योजनांतर्गत कोई व्यक्ति/व्यक्तियों के समूह/एन.आर.आई./ एन.जी.ओ./निजी संस्था ग्राम पंचायतों में पंचायती राज अधिनियम की धारा 15 के अंतर्गत अनुमन्य विकास कार्य एवं अवस्थापना सुविधाएं विकसित करा सकते हैं।
- कार्य की लागत की 60% धनराशि सहयोगकर्ता द्वारा एवं 40% धनराशि राज्य सरकार द्वारा वहन की जाएगी।
- योजना का नाम सहयोगकर्ता की इच्छानुसार रखा जाएगा।

उद्देश्य

- उत्तर प्रदेश के मूल निवासियों को मातृभूमि के विकास से जुड़ने का अवसर प्रदान करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों का विकास।
- निजी निवेश एवं नियमित अनुश्रवण से कार्यों की गुणवत्ता में वृद्धि करना।

प्रक्रिया

- सहयोगकर्ता को योजना की वेबसाइट **https://mbhumi.upprd.in/Registration/AuthorRegistration** पर अपने मोबाइल नम्बर एवं ई-मेल के माध्यम से पंजीकरण कर व्यक्तिगत यूजर आई.डी. एवं पासवर्ड प्राप्त करना होगा।
- **Register your project** पर व्यक्तिगत व योजना का विवरण देना होगा।
- **View all projects** पर जाकर **Take action** पर क्लिक कर **Pay now** की प्रक्रिया पूरी करनी होगी।
- सहयोगकर्ता अपने पंजीकृत कार्य के सापेक्ष 60% या उससे अधिक का भी आर्थिक सहयोग कर सकते हैं।

प्रस्तावित निर्माण कार्य

• स्कूल/इंटर कॉलेज की कक्षाएं व स्मार्ट क्लास • सामुदायिक भवन/बारात घर • प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, हॉस्पिटल • आंगनबाड़ी केंद्र
• पुस्तकालय/सभागार
• व्यायामशाला/ओपन जिम
• सी.सी.टी.वी./ सर्विलांस सिस्टम
• शिल्पकारों के लिए अवस्थापना सुविधाएं • अंत्येष्टि स्थल • तालाब का सौंदर्यीकरण • जल संरक्षण का कार्य
• बस स्टैण्ड/यात्री शेड
• स्ट्रीट लाइट/एल.ई.डी. लाइट
• फायर सर्विस स्टेशन की स्थापना
• अन्य विकास कार्य

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

https://mbhumi.upprd.in/ | matribhumi.up@gmail.com, up.panchayatiraj@gmail.com | 8127947062/7991949673

सितम्बर-2024, वर्ष 33, अंक 62

उत्तर प्रदेश

संदेश

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :

संजय प्रसाद

प्रमुख सचिव, सूचना

❖

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :

शिशिर

सूचना निदेशक

❖

सम्पादकीय परामर्श :

अंशुमान राम त्रिपाठी

अपर निदेशक, सूचना

❖

डॉ. मधु ताम्बे

उपनिदेशक सूचना

❖

डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह

सहायक निदेशक, सूचना

❖

प्रभारी सम्पादक :

दिनेश कुमार गुप्ता

उपसम्पादक, सूचना

❖

अतिथि सम्पादक :

कुमकुम शर्मा

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ

ईमेल : upsandesh20@gmail.com

दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 9412674759, 7705800978

उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित

भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं हैं। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

इस अंक में

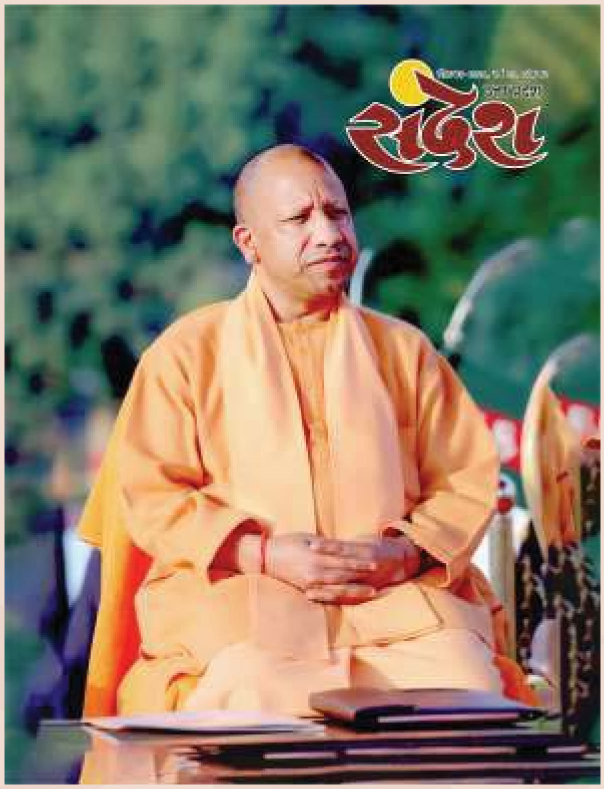

- एकात्म मानवतावाद के प्रेरणता : पं. दीन दयाल उपाध्याय 3
  –सुरेन्द्र अग्निहोत्री
- यूपी की राजनीति के लौह पुरुष : कल्याण सिंह 7
  –वीरेन्द्र सिंह लोधी
- आयुष्मान भारत का मिशन 9
  –जय प्रकाश नड्डा
- उत्तर प्रदेश बनेगा 'ज़ीरो पावर्टी स्टेट' 11
  –डॉ. रविशंकर पांडेय
- युवाओं के प्रति समर्पित सरकार, आगे बढ़ता मिशन रोज़गार 16
  –उपेन्द्र कुमार
- धार्मिक पर्यटन बना अर्थ व्यवस्था का आधार 25
  –डॉ. शिव राम पाण्डेय

सम्पादकीय

उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जो अपने कठोर एवं कुशल प्रशासन के लिए जाने जाते हैं, विगत वर्षों में अनेक बार सभी सरकारी विभागों में ई-ऑफिस की व्यवस्था को लागू करने के लिए आदेश दिए गये किन्तु किन्हीं कारणों से यह व्यवस्था पूरी तरह से लागू नहीं हो पा रही थी, मुख्यमंत्री ने हाल ही में पांच सितम्बर से इस ई-ऑफिस को पूर्णतः लागू करने के आदेश ज़ारी कर दिए हैं। ऐसे कई जिले जिनका परफारमेंस ई-ऑफिस में बहुत खराब है उनको नाराज़गी व्यक्त करते हुए चेतावनी दी गयी है कि जल्द से जल्द सभी कार्यालयों में ई-ऑफिस की व्यवस्था को सुचारू रूप से लागू किया जाय। जिससे प्रशासनिक कार्यप्रणाली में सुधार लाया जा सके। शासन के सर्वोच्च प्राथमिकता वाले इस कार्यक्रम को गंभीरता से न लेने पर मुख्यमंत्री द्वारा अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपने स्तर पर कार्य की प्रगति की समीक्षा करते हुए पाँच सितम्बर तक समस्त मण्डलों, जनपदों, नगर निगमों, विकास प्राधिकरणों में अनिवार्य रूप से ई-ऑफिस को लागू करने के स्पष्ट निर्देश दिए गये हैं।

बारह वर्षों के अन्तराल पर होने वाले महाकुम्भ की तैयारियों को लेकर मुख्यमंत्री सजग हैं और स्वयं प्रयागराज जाकर तैयारियों का जायजा ले रहे हैं। सन् 2025 में महाकुम्भ तीर्थराज प्रयाग की धरती पर 13 जनवरी से प्रारम्भ होकर 26 फरवरी तक चलेगा। मुख्यमंत्री ने दस दिसम्बर तक सभी कार्य पूरे करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने महाकुम्भ को स्वच्छ, सुरक्षित और सुव्यवस्थित बनाने के लिए कहा है। मुख्यमंत्री ने कुम्भ स्थल पर आने वाले साधु-संतों के सुझाव भी सुने और अतिशीघ्र निर्माण कार्यों को पूरा करने के लिए निर्देश देते हुए कहा कि इस बार का महाकुम्भ स्वच्छता, सुरक्षा और सुविधा के नए मानक स्थापित करेगा ताकि दुनिया भर से आने वाले तीर्थ यात्रियों को असुविधा न हो और वे मेले का सुखद आनन्द उठा सकें।

योगी सरकार अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के अधिकारों व हितों की रक्षा के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। अपराध की गम्भीरता को देखते हुए पीड़ित परिवारों को सरकार द्वारा वित्तीय सहायता भी प्रदान की जा रही है ताकि पीड़ित परिवारों को न्यायिक प्रक्रिया के दौरान सहायता मिल सके। इस पहल के तहत सरकार यह सुनिश्चित करती है कि जांच और महत्वपूर्ण बिन्दुओं के आधार पर पीड़ितों को आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान की जाय।

सम्पादक

एकात्म मानवतावाद के प्रेरणता : पं. दीन दयाल उपाध्याय

–सुरेन्द्र अग्निहोत्री

एकात्म मानववाद मानव जीवन व सम्पूर्ण सृष्टि के एकमात्र सम्बन्ध का दर्शन है। एकात्म मानववाद एक ऐसी धारणा है जो सर्पिलाकार मण्डलाकृति द्वारा स्पष्ट की जा सकती है जिसके केंद्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा हुआ एक घेरा परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ एक घेरा–समाज, जाति, फिर राष्ट्र, विश्व और फिर अनंत ब्रम्हांड को अपने में समाविष्ट किये है। इस अखण्डमण्डलाकार आकृति में एक घातक में से दूसरे फिर दूसरे से तीसरे का विकास होता जाता है। सभी एक–दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व साधते हुए एक दुसरे के पूरक एवं स्वाभाविक सहयोगी है। इनमें कोई संघर्ष नहीं है। इसका वैज्ञानिक विवेचन करने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म मथुरा जिले के गाँव नंगला चन्द्रभान की पावन भूमि पर 25 सितम्बर, 1916 को हुआ था। पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय जो रेलवे में नौकरी करते थे। उनकी माता का नाम रामप्यारी था जो धार्मिक प्रकृति की महिला थीं। जब पंडित दीनदयाल उपाध्याय तीन वर्ष के थे तब उनके सर से पिता का साया उठ गया। पति की मृत्यु के बाद माँ रामप्यारी भी बीमार रहने लगी। जब पंडित दीनदयाल उपाध्याय सात वर्ष के थे उनकी माता का भी देहांत हो गया। 7 वर्ष की छोटी सी उम्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय माता–पिता के प्यार से वंचित हो गये।

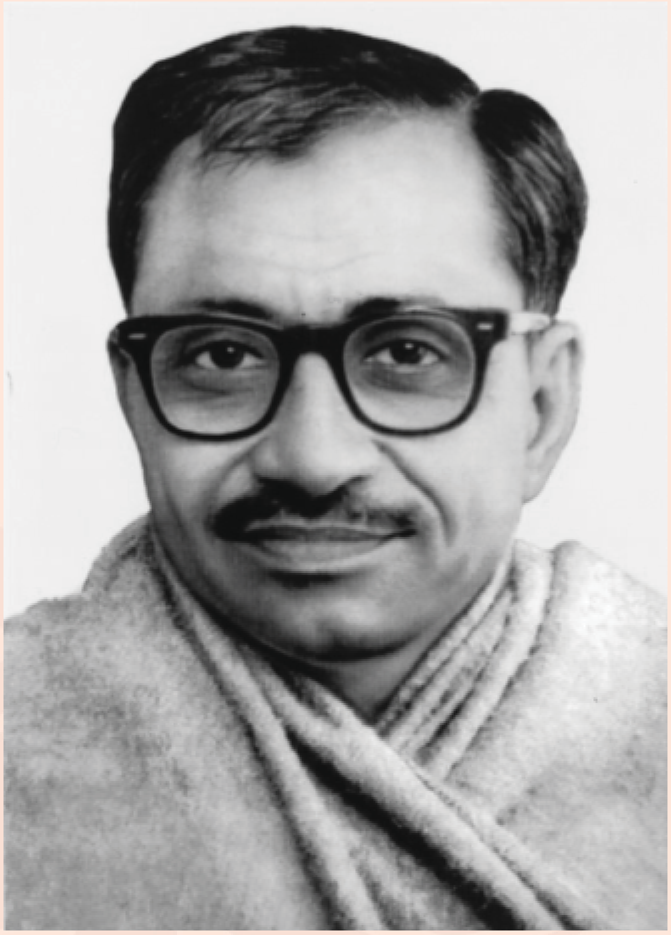

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक स्वयंसेवक के साथ साथ दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार, पत्रकार भी थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माण में अहम् भूमिका निभाई थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए पूरे समर्पित भाव से काम किया। सन् 1951 ई. में भारतीय जनसंघ की स्थापना डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने की। पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के सह संस्थापक थे। 1951 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय को जनसंघ का संगठन मंत्री बनाया गया। दो वर्ष बाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय को सन् 1953 ई. में अखिल भारतीय जनसंघ का महामन्त्री निर्वाचित किया गया और लगभग 15 वर्ष तक पूरे निस्वार्थ सेवा समर्पित भाव से पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इस पद पर रहकर जनसंघ की अमूल्य सेवा की। 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के असमय निधन से पूरे जनसंघ के संगठन की ज़िम्मेदारी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के कन्धों पर थी, जिसे उन्होंने अपनी अद्‌भुत कार्यक्षमता के बल पर बखूबी निभाया। भारतीय जनसंघ का 14वां वार्षिक अधिवेशन 1967 में कालीकट पर हुआ। जिसमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय को अखिल भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एक लेखक के रूप में अनेक पुस्तकों का सृजन किया जिनमें दो योजनाएँ, राजनीतिक डायरी, भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन, सम्राट चन्द्रगुप्त, जगद्‌गुरु शंकराचार्य, एकात्म मानववाद और राष्ट्र जीवन की दिशा प्रमुख हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने

चन्द्रगुप्त नाटक केवल एक ही बैठक में लिख डाला था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी भारत माता को राष्ट्रीयता का आधार मानते थे। वो कहते थे कि हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता हैं, केवल भारत ही नहीं, माता शब्द हटा दीजिये तो भारत केवल ज़मीन का टुकड़ा मात्र बनकर रह जायेगा। इससे उनकी राष्ट्रवादी और हिंदुत्व विचारधारा झलकती थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी व्यक्तिवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद को पश्चिमी अवधारणा मानते थे। कहा जाए तो इनको भौतिकवादी विचारधाराओं का स्वरुप मानते थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानववाद जैसी प्रगतिशील विचारधारा के प्रणेता थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा 22 से 25 अप्रैल, 1965 को मुम्बई में दिये गये चार व्याख्यानों के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एक लेखक के रूप में अनेक पुस्तकों का सृजन किया जिनमें दो योजनाएँ, राजनीतिक डायरी, भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन, सम्राट चन्द्रगुप्त, जगद्गुरु शंकराचार्य, एकात्म मानववाद और राष्ट्र जीवन की दिशा प्रमुख हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने चन्द्रगुप्त नाटक केवल एक ही बैठक में लिख डाला था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी भारत माता को राष्ट्रीयता का आधार मानते थे। वो कहते थे कि हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता हैं, केवल भारत ही नहीं, माता शब्द हटा दीजिये तो भारत केवल ज़मीन का टुकड़ा मात्र बनकर रह जायेगा।

आधुनिक बनाम पुरातन

देश की दिशा के संबंध में विचार करने वालों में दो प्रकार के लोग हैं. एक तो वे हैं जो कि भारत की हजारों वर्षों से चली आने वाली प्रगति की दिशा में, पराधीन होने पर जहाँ तहाँ रुक गया, वहाँ से उसे आगे बढ़ाना चाहिये–यह विचार ले कर चलते हैं। दूसरी ओर वे लोग हैं जो कि भारत की उस पुरानी वस्तु का भिन्न–भिन्न कारणों से (काल के कारण से या मूलतः उस अवस्था को अयोग्य मानकर) उसके संबंध में विचार करने को तैयार नहीं। इसके विपरीत पश्चिम में जो आंदोलन हुये, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में जो विचार–सारणियां जन्मीं, उनको ही वे प्रगति की दिशा समझकर उन संपूर्ण विचारधाराओं और आंदोलनों को भारत

के ऊपर आरोपित करने का प्रयत्न करते हैं। भारत उन्हीं का किसी–न–किसी प्रकार से प्रतिबिंब बने, इसी विचार को लेकर वे चलते हैं। ये दोनों ही प्रकार के विचार सत्य नहीं हैं। किंतु, उनको पूर्णतः अमान्य करके भी चलना ठीक नहीं होगा। उनमें सत्यांश अवश्य है। जो यह विचार करते हैं कि जहां हम रुक गये थे वहीं लौट कर पुनः चलना आरंभ करें, वे यह भूल जाते हैं कि लौटकर चलना वांछनीय हो या न हो, असंभव अवश्य है, क्योंकि समय की गति को पीछे नहीं ले जाया जा सकता।

पुराना छूट नहीं सकता

हजार वर्षों में कुछ हमने किया है, वह विवशता में हमें मिला हो या प्रेमपूर्वक हमने मिलाया हो, उसमें से हर वस्तु को हटा करके नहीं चल सकते। साथ ही इस काल में हमनें स्वयं भी कुछ न कुछ अपने जीवन में निर्माण किया है। जो नयी परिस्थितियाँ पैदा हुईं, जो नयी चुनौतियाँ आयीं, उनमें हम सदैव वैरागी (Passive agent) रूप में निष्क्रिय होकर नहीं बैठे। बाहर वालों ने जो कुछ किया, हम केवल उसका प्रतिकार ही नहीं करते रहे, हमने भी परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न किया। इसलिये उस सब जीवन को भुलाकर तो चल नहीं सकते।

विदेशी विचार सार्वलौकिक नहीं

इसी प्रकार जो लोग विदेशी जीवन तथा विचारों को भारत की प्रगति का आधार बनाकर चलना चाहते हैं, वे भी भूल जाते हैं कि ये विदेशी विचार एक परिस्थिति–विशेष तथा प्रवृत्ति–विशेष की उपज हैं। ये सार्वलौकिक नहीं है। उन पर 'पश्चिमी देशों की राष्ट्रीयता' प्रकृति और संस्कृति की अमिट छाप है। साथ ही वहाँ के ये बहुत से विचार अब पुराने पड़ चुके हैं। कार्ल मार्क्स का सिद्धांत देश और काल दोनों ही दृष्टियों से इतना बदल चुका है कि आज हम मार्क्सवादी विश्लेषण को तोते की तरह रटकर आँख मूँद कर भारत पर लागू करें तो यह वैज्ञानिक अथवा विवेकपूर्ण दृष्टिकोण नहीं कहा जायेगा। वह रूढ़िवादिता होगी। जो अपने देश की रूढ़ियों को मिटाकर सुधार का दावा करें, वे विदेश की रूढ़ियों के दास बन जायें, यह तो आश्चर्य का विषय है।

अपना देश अपनी परिस्थितियाँ

प्रत्येक देश की अपनी विशेष ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति होती है और उस समय उस देश के जो भी नेता और विचारक होते हैं, वे उस परिस्थिति में से देश को आगे बढ़ाने की दृष्टि से मार्ग निर्धारित करते हैं.

अपनी समस्याओं के समाधान के लिये जो हल उन्होंने सुझाये, वे उसी प्रकार, भिन्न परिस्थितियों में रहने वाले समाज पर पूरी तरह लागू हो जायें, यह विचार करना गलत हैएक सामान्य उदाहरण लें। विश्व भर में मनुष्यों के शरीर के अंगों की क्रिया समान होते हुये भी जो औषधि इंग्लैण्ड में कारगर होती है, वह भारत में भी उपयोगी सिद्ध होगी, यह निर्विवाद नहीं कहा जा सकता। रोगों का संबंध जलवायु, आचार–विचार, खानपान तथा वंश–परंपरा से रहता है. ऊपर से देखने पर रोग एक–सा दिखाई देने पर भी उसकी औषधि सब मनुष्यों के लिये एक नहीं हो सकती। सब रोगों और सब मनुष्यों के लिये एक ही औषधि का नारा लगाने वाले वाले नीम–हकीम हो सकते हैं, चिकित्सक नहीं. आयुर्वेद में सिद्धांत बताया है– 'यद्देशस्य यो जन्तुः तद्देश्य तस्यौषधम्'। इसलिये बाहर की जितनी भी बातें हैं, उनको हम उसी प्रकार से लेकर अपने देश में चलें, यह तो समीचीन नहीं होगा। उसके द्वारा हम कभी प्रगति नहीं कर सकेंगे वाले वाले नीम–हकीम हो सकते हैं, चिकित्सक नहीं। आयुर्वेद में सिद्धांत बताया है– 'यद्देशस्य यो जन्तुः तद्देश्य तस्यौषधम्'। इसलिये बाहर की जितनी भी बातें हैं, उनको हम उसी प्रकार से लेकर अपने देश में चलें, यह तो समीचीन नहीं होगा। उसके द्वारा हम कभी प्रगति नहीं कर सकेंगे किंतु दूसरी बात का भी विचार करना होगा कि ये जितनी भी बातें विश्व में हुई हैं, ये सबकी सब ऐसी नहीं कि उनका संबंध केवल देश विशेष के साथ ही हो। वहां भी मानव रहते हैं और मानव के चिंतन और क्रियाओं में से जो वस्तु पैदा होती हैं, उसका शेष मानवों के साथ भी कुछ न कुछ संबंध रह सकता है। इसलिये मानव के ज्ञान में जो कुछ अर्जित है, उससे हम बिल्कुल आँख बंद करके चलें, यह भी बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी। उसमें से सत्य को हमें स्वीकार करना और असत्य को छोड़ना पड़ेगा। सार का भी अपनी परिस्थिति के अनुसार परिष्कार करना होगा। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि जहां तक शाश्वत सिद्धांतों तथा स्थायी सत्यों का संबंध है, हम सम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें। इन तत्वों में जो हमारा है, उसे युगानुकूल और जो बाहर का है, उसे देशानुकूल ढालकर हम आगे चलने का विचार करें।

आदर्शों का संघर्ष

पश्चिम की राजनीति अभी तक राष्ट्रीयता, प्रजातंत्र, समता या समाजवाद के आदर्शों को मानकर चली है। विश्व शांति के लिये भी बीच–बीच में प्रयत्न हुये हैं तथा विश्व–एकता के आदर्श की कल्पना भी लोगों ने की है–इन उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन के रूप में लीग ऑफ नेशन्स तथा दूसरे युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ को जन्म दिया गया। विभिन्न कारणों से ये सफल नहीं हुये। फिर भी ये उस दिशा में प्रयत्नशील अवश्य हैं। परन्तु, ये सभी आदर्श व्यवहार में अधूरे तथा विभिन्न समस्याओं को जन्म देने वाले सिद्ध हुये हैं। राष्ट्रीयता दूसरे देशों की राष्ट्रीयता से टकराकर उनके लिये घातक बन जाती है तथा विश्वशांति को नष्ट करती है। साथ ही विश्वशांति को यदि यथास्थिति का पर्याय मान लिया जाये तो बहुत–से राष्ट्र स्वतंत्र ही नहीं हो पायेंगे। विश्व की एकता और राष्ट्रीयता में भी टकराव आता है। कुछ लोग विश्व–एकता के लिये राष्ट्रीयता को नष्ट करने की बात कहते हैं तो दूसरे विश्व–एकता को स्वप्न–जगत् की बात बताकर अपने राष्ट्र के स्वार्थों को ही सर्वाधिक महत्व देते हैं। दोनों का मेल कैसे बिठाया जाये, इस प्रकार की समस्या प्रजातंत्र और समाजवाद के बीच उपस्थित होती है। शोषण मिटाने के लिये समाजवाद लाया गया। परन्तु उसने व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा को ही नष्ट कर दिया। आज विश्व किंकर्तव्यविमूढ़ है। उसे मार्ग नहीं दिख रहा कि वह कहाँ जाये। पश्चिम आज इस अवस्था में नहीं कि वह निर्विवादरूप से आत्म–विश्वासपूर्वक कह सके "नान्यः पन्था"। वे स्वयं मार्ग टटोल रहे हैं, अतः उनका अन्धानुकरण करने से तो 'अन्धेन नीयमाना यथान्धारू' की ही उक्ति चरितार्थ होगी। इस परिस्थिति में हमारी दृष्टि भारतीय संस्कृति की ओर जाती है। क्या यह विश्व की समस्या के समाधान में कुछ योगदान कर सकती है?

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का निधन 11 फरवरी, 1968 को हुआ। उनका निष्प्राण शरीर 11 फरवरी, 1968 को मुगल सराय रेलवे स्टेशन पर पाया गया। उनके निधन कि खबर सुनकर पूरा देश शोकाकुल हो गया। ◆

मो. : 09415508695

यूपी की राजनीति के लौह पुरुष : कल्याण सिंह

—वीरेन्द्र सिंह लोधी

भारतीय राजनीति में सरलता, स्पष्टवादिता, सत्यवादिता, संवेदनशीलता शुचिता, पारदर्शिता व जनसेवा आदि गुण के पर्याय स्व. श्री कल्याण सिंह जी उत्तर प्रदेश के दो बार मुख्यमंत्री और कई बार अतरौली के विधानसभा सदस्य रहे। प्रखर राष्ट्रवादी राजनेता के रूप में देश—विदेश में जाने जाने वाले कल्याण सिंह को वर्ष 2022 में भारत का दूसरा सर्वोच्च पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। अजातशत्रु कथनी और करनी में दृढ़ इच्छा शक्ति के जन नायक ने प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर अपने शासन काल में हुए कार्य में भारतीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब के साथ वास्तुकला पर जोर दिया जिसके कारण प्रदेश सरकार की इमारतों की डिजाइन में भारतीय वास्तुकला की झलक मिलती है। सच के साथ खड़े रहने की स्पष्टवादिता की झलक लेखक ने स्वयं अनुभव की है। तख्तापलट प्रकरण के बाद मिली विजय के अति उत्साह में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने एक जनपद में पुलिस अधिकारी की कार ने नीचे फटाका फेंक देने पर पुलिस के लाठीचार्ज का उन्होंने जिस दृढ़ता के साथ पुलिस कार्यवाही को उचित बताया और भारी दबाव के बाद भी पुलिस अधिकारी जसवीर सिंह का स्थानांतरण नहीं किया यह एक अलग मिसाल है।

श्री कल्याण सिंह पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद 'समाज नहीं वरन् व्यक्ति और समाज की एकात्मता का विचार से प्राण प्रण से जुटे रहे। भारत में इसे धर्म कहा गया है 'यतो अभ्युदय निःश्रेयस संसिद्धि स धर्म।' अंत्योदय के प्रति पालक समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान और विकास को सुनिश्चित करने के लिए अंत्योदय का कार्य करते रहे।

6 जनवरी, 1932 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में लोधी परिवार में पिता का नाम श्री तेजपाल सिंह लोधी और माता का नाम श्रीमती सीता देवी के घर जन्मे कल्याण सिंह जी को प्यार से सभी लोग बाबूजी के नाम से पुकारते थे। पहली बार कल्याण सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जून 1991 में बने। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद उन्होंने इसकी नैतिक ज़िम्मेदारी लेते हुये 6 दिसम्बर, 1992 को मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। सितम्बर 1997 से नवम्बर 1999 तक पुनः उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। 2009 में एटा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय सांसद चुने गये। लोकप्रिय जन नेता, सुशासन के संवाहक, यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री व राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल रहने वाले कल्याण सिंह ने अपने राजनैतिक सफर अलीगढ़ जिले की अतरौली तहसील के मढ़ौली गाँव के टेढ़े—मेढ़े संघर्षपूर्ण

रास्ते पर चलकर बचपन में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ कर किया था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने अध्यापक की नौकरी की और राजनीति के साथ अपने को समर्पित रखा। वर्ष 1967 में जनसंघ के टिकट पर अतरौली सीट से पहली बार विधानसभा पहुंचे और साल 1980 तक लगातार इस सीट से विजय प्राप्त करते रहे। जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो जाने पर वर्ष 1977 में उत्तर प्रदेश में जनता पार्टी की सरकार बनने पर उन्हें राज्य के स्वास्थ्य मंत्री बने। वर्ष 1980 के विधानसभा चुनाव में कल्याण सिंह को हार का सामना भी करना पड़ा था। नब्बे के दशक की शुरुआत में राजनीति का जो दौर था, उसे मण्डल और कमण्डल यानी आरक्षण और राम मंदिर आंदोलन के तौर पर जाना जाता है। देश भर में एक ओर मण्डल आयोग की सिफारिशों का समर्थन और विरोध चल रहा था, तो दूसरी ओर अयोध्या में राम–जन्मभूमि के लिए आंदोलन चल रहा था। 30 अक्टूबर, 1990 को आन्दोलन के उग्र होने पर प्रशासन को अयोध्या में कारसेवकों पर गोली चलानी पड़ी जिसमें कई कारसेवकों की मौत हो गई। पार्टी ने उनका मुकाबला करने के लिए कल्याण सिंह को आगे किया। कल्याण सिंह ने महज एक साल में 1991 में पूर्ण बहुमत की सरकार बना ली। मुख्यमंत्री बनने के बाद कल्याण सिंह ने अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों के साथ अयोध्या का दौरा किया और राम मंदिर का निर्माण करने के लिए शपथ ली थी। कल्याणकारी निर्णयों, दृढ़ता और सादगी भरे जीवन के साथ भारतीय ग्रामीण परिधान भी गर्व के साथ धारण कर किसान के सच्चे बेटे की तरह भारतीय राजनीति में अनुपम अनूठा आदर्श स्थापित करने के लिए अपने आराध्य के प्रति अपनी सच्ची भक्ति के कारण श्री राम मंदिर के लिए अपनी कुर्सी तक त्याग दी। भारतीय संस्कृति की सनातन महान विचारधारा के प्रति ”बाबूजी के समर्पण से हमें सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी। ◆

मुख्यमंत्री बनने के बाद कल्याण सिंह ने अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों के साथ अयोध्या का दौरा किया और राम मंदिर का निर्माण करने के लिए शपथ ली थी। कल्याणकारी निर्णयों, दृढ़ता और सादगी भरे जीवन के साथ भारतीय ग्रामीण परिधान भी गर्व के साथ धारण कर किसान के सच्चे बेटे की तरह भारतीय राजनीति में अनुपम अनूठा आदर्श स्थापित करने के लिए अपने आराध्य के प्रति अपनी सच्ची भक्ति के कारण श्री राम मंदिर के लिए अपनी कुर्सी तक त्याग दी।

(लेखक मारहरा (एटा) विधानसभा क्षेत्र के विधायक हैं)

मो. : 9627965555

आयुष्मान भारत का मिशन

—जय प्रकाश नड्डा

आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना यानी एबी पीएम–जय योजना की छठी वर्षगांठ गर्व का क्षण है। सितंबर 2018 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में शुरू की गई यह योजना आज विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सेवा योजना में से एक बन चुकी है। यह योजना इस सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है कि सभी नागरिकों विशेष रूप से सबसे कमजोर वर्गों के लिए समान स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराई जाए। पिछले छह वर्षों में इस योजना ने लाखों जिंदगियों को छूआ है। उन्हें जीवनरक्षक उपचार प्रदान किया है। उनके जीवन में एक नई आशा जगाई है। आयुष्मान भारत की यात्रा प्रमाण है कि एक राष्ट्र जब अपने लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को बेहतर बनाने के लक्ष्य के साथ एकजुट होता है तो क्या कुछ हासिल कर सकता है।

आयुष्मान भारत का मुख्य मिशन यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी भारतीय अपनी वित्तीय स्थिति के कारण स्वास्थ्य सेवा से वंचित न रहे। माध्यमिक और तृतीयक अस्पताल देखभाल को कवर करने के लिए प्रति परिवार पांच लाख रुपये के वार्षिक कवरेज के साथ इस योजना ने आर्थिक रूप से वंचित परिवारों को देश के कुछ सर्वश्रेष्ठ अस्पतालों में निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवा की सुविधा उपलब्ध कराई है। बीते दिनों ही सरकार द्वारा 70 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग के नागरिकों के लिए इस योजना का विस्तार करने का निर्णय लिया गया है, जो देश के बदलते जनसांख्यिकीय परिदृश्य को देखते हुए महत्वपूर्ण कदम है। इससे पहले, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, जैसे कि आशा बहनों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आंगनवाड़ी सहायकों के परिवारों को योजना के दायरे में लाया गया था। आज 55 करोड़ से अधिक लोग इस योजना के तहत मुफ्त स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पात्र हैं। इसमें अभी तक 7.5 करोड़ से अधिक सफल उपचार हुए हैं, जिन पर एक लाख करोड़ रुपये से अधिक का खर्च हुआ है। यह एक बड़ी उपलब्धि है। जो परिवार स्वास्थ्य खर्च के कारण गरीबी के शिकंजे में फंस जाते थे, उनके लिए यह योजना वित्तीय ढाल साबित हो रही है। योजना के तहत लाभार्थी किसानों से लेकर दैनिक मजदूरों तक के कथन प्रमाण हैं कि यह योजना उन्हें आर्थिक परेशानी से बचा रही है। इस मायने में आयुष्मान भारत योजना अपने वादे पर खरी उतरी है।

इस योजना में उपचार का दायरा भी बहुत व्यापक हैं, जो 1900 से अधिक चिकित्सा प्रक्रियाओं को कवर करता है। इनमें हार्ट की बाईपास या ज्वाइंट रिप्लेसमेंट जैसी जटिल सर्जरी से लेकर कैंसर और गुर्दे की बीमारियों के उपचार तक शामिल हैं। ये ऐसे उपचार हैं जो पहले तमाम लोगों के लिए पहुंच से बाहर थे, लेकिन अब इस योजना ने उन्हें सुलभ, किफायती और सभी के लिए उपलब्ध बना दिया है। एबी पीएम जय की एक विशेषता इसका एक मजबूत स्वास्थ्य सेवा प्रदाता नेटवर्क तैयार करने की क्षमता रही है। आज, देश के 29,000 से अधिक अस्पताल, जिनमें 13,000 से अधिक निजी अस्पताल शामिल हैं, इस योजना के तहत सूचीबद्ध हैं। यह नेटवर्क ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों तक फैला हुआ है, जिससे सुनिश्चित होता है कि देश के सबसे दूरस्थ

हिस्सों में रहने वालों को भी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें। योजना की अनूठी पोर्टेबिलिटी सुविधा ने यह सुनिश्चित किया है कि लाभार्थी अपने राज्य के अलावा देश भर के अस्पतालों में इलाज करा सकते हैं।

इस विशाल नेटवर्क को एक मजबूत आइटी बुनियादी ढांचे से लैस किया गया है, जो दावों के निपटान में पारदर्शिता, दक्षता और गति सुनिश्चित करता है। आधार आधारित बायोमीट्रिक सत्यापन और पेपरलेस क्लेम प्रोसेसिंग ने धोखाधड़ी और अक्षमता को काफी हद तक कम किया है। आयुष्मान भारत की सफलता ने स्वास्थ्य सेवा तंत्र के अन्य हिस्सों में भी सुधार को उत्प्रेरित किया है। योजना के गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा पर जोर ने सार्वजनिक और निजी दोनों अस्पतालों को अपने बुनियादी ढांचे और सेवाओं को उन्नत करने के लिए प्रेरित किया है।

आयुष्मान भारत का मुख्य मिशन यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी भारतीय अपनी वित्तीय स्थिति के कारण स्वास्थ्य सेवा से वंचित न रहे। माध्यमिक और तृतीयक अस्पताल देखभाल को कवर करने के लिए प्रति परिवार पांच लाख रुपये के वार्षिक कवरेज के साथ इस योजना ने आर्थिक रूप से वंचित परिवारों को देश के कुछ सर्वश्रेष्ठ अस्पतालों में निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवा की सुविधा उपलब्ध कराई है।

एबी पीएम जय के साथ–साथ, सरकार आयुष्मान आरोग्य मंदिर यानी एएएम के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने पर भी काम कर रही है। अब तक देश में 1.73 लाख से अधिक आरोग्य मंदिर स्थापित किए जा चुके हैं, जो सामान्य बीमारियों और मधुमेह, उच्च रक्तचाप और कैंसर जैसी परिस्थितियों के लिए मुफ्त स्क्रीनिंग, निदान और दवाएं प्रदान कर रहे हैं। कल्याण (वेलनेस) और प्रारंभिक निदान को बढ़ावा देकर हम अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता को कम करने और स्वास्थ्य सेवा की पहुंच को लंबे समय में और अधिक स्थायी बनाने की उम्मीद करते हैं। आयुष्मान भारत की उपलब्धियों पर अभिभूत होने के साथ ही हमें भावी चुनौतियों को भी स्वीकार करना चाहिए। योजना का पैमाना विशाल है और इसके साथ इसे लगातार अनुकूलित, परिष्कृत और सुधारने की जिम्मेदारी आती है। हम योजना की पहुंच को बढ़ाने, अस्पतालों को समय पर भुगतान सुनिश्चित करने और हर लाभार्थी को प्रदान की जाने वाली चिकित्सा सेवा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। भारत की समग्र, किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा की इस यात्रा को और सुगम बनाने के लिए हम आयुष्मान भारत को मजबूत करना जारी रखेंगे। हम उपचारों की सूची का विस्तार करने, सूचीबद्ध अस्पतालों की संख्या बढ़ाने और आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के सफल निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। किसी भी राष्ट्र का स्वास्थ्य उसकी समृद्धि की नींव है। स्वस्थ जनता देश के विकास, उत्पादकता और नवाचार में योगदान करने में सक्षम होती है। आयुष्मान भारत इस स्वस्थ, मजबूत और विकसित भारत की संकल्पना का केंद्र है। इस योजना की सफलता सरकार, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और लोगों के बीच की गई कड़ी मेहनत, समर्पण और सहयोग को दर्शाती है। हम प्रत्येक नागरिक के कल्याण और स्वास्थ्य को लेकर प्रतिबद्ध हैं। इस योजना की छठी वर्षगांठ पर, आइए हम सभी नागरिकों के लिए एक समावेशी, सुलभ और सहानुभूतिपूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रणाली बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराएं। हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ भारत के निर्माण की यात्रा को जारी रखेंगे। जय हिंद ! ◆

साभार : दैनिक जागरण 23 सितम्बर, 2024 (लेखक केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री हैं)

उत्तर प्रदेश बनेगा 'ज़ीरो पावर्टी स्टेट'

—डॉ. रविशंकर पांडेय

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने लगातार आठवीं बार पंद्रह अगस्त 2024 को ध्वजारोहण करते हुए अपने संबोधन में यह घोषणा करते हुए देश और प्रदेश वासियों को चौंका दिया कि वे अपने प्रदेश को भारत का पहला गरीबी मुक्त राज्य बनाएंगे। सहसा लोगों को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। लेकिन योगी जी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी इस योजना को खोलते हुए आगे कहा कि प्रत्येक परिवार की आई डी बनाकर उसे सरकारी योजनाओं का कोई न कोई लाभ अवश्य देते हुए प्रदेश में आर्थिक रूप से कमजोर छः करोड़ लोगों को सात वर्षों के भीतर गरीबी से बाहर निकाल कर सम्मानजनक जीवन की सभी परिस्थितियां उपलब्ध कराई जाएंगी। उन्होंने नीति आयोग की रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश गरीबी निवारण की कंपोजिट रैंकिंग में देश में प्रथम स्थान पर है, जो हम सबके लिए एक गर्व की बात है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आकांक्षात्मक विकासखंडों के माध्यम से पिछड़े क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा रहा है। उन्होंने अपने इस संकल्प को पूरा करने में प्रदेश के युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि 'मुख्यमंत्री उद्यमी विकास योजना' के माध्यम से अब तक 1.62 करोड़ युवा उद्यमियों को सरकार ने रोजगार उपलब्ध कराया है। यही नहीं, युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए दो करोड़ स्मार्टफोन और टैबलेट निरूशुल्क वितरित किए गये हैं। योगी जी ने यह भी कहा कि उक्त योजना में 10 लाख लघु व मध्यम औद्योगिक इकाइयों के स्थापना के जरिए 50 लाख युवाओं को रोजगार देने की घोषणा भी किया। अब देखना यह है कि मुख्यमंत्री जी की इस महत्वाकांक्षी योजना को उनकी नौकरशाही कैसे मूर्तरूप दे पाती है?

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के उपर्युक्त महत्वाकांक्षी संकल्प के संबंध में यदि हम देश और प्रदेश में गरीबी के प्रतिशत का विश्लेषण करें तो पाएंगे कि वर्ष 2021के अंत में उत्तर प्रदेश में 22.93 गरीब थे जबकि 2015–16 में यह आंकड़ा 37.63 प्रतिशत था। नीति आयोग द्वारा जारी की गई एक हालिया रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख किया गया है कि वर्ष 2015–2016 से 2019–2021 के मध्य देश में बहुआयामी गरीबी में जीवन यापन कर रहे लोगों की संख्या आशातीत रूप से कम हुई है जिसमें उत्तर प्रदेश राज्य अव्वल है। यह रिपोर्ट वास्तव में प्रदेश वासियों और उत्तर प्रदेश सरकार के लिए एक खुशखबरी लेकर आई है। इस दौरान पूरे देश में 13.50 करोड़ लोग न केवल बहुआयामी गरीबी के मकड़जाल से मुक्त हुए बल्कि विकास की दौड़ में फिसड्डी व बिमारू कहे जाने वाले राज्यों बिहार, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए सबको चौंकाने का काम किया है। संख्यात्मक दृष्टिकोण से अकेले उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में 3.43 करोड़ लोग

बहुआयामी गरीबी से इस दौरान ऊपर उठे हैं जो सभी राज्यों की तुलना में सबसे ज्यादा है। गरीबों की संख्या घटाने के मामले में उत्तर प्रदेश के बाद बिहार, मध्यप्रदेश, उड़ीसा और राजस्थान राज्य रहे हैं। विगत दिनों नीति आयोग ने राज्यों सहित पूरे देश की बहुआयामी गरीबी सूचकांक की नवीनतम रिपोर्ट जारी की है, जिसके अनुसार अपने देश में गरीबों की संख्या में एक बड़ी गिरावट सामने आई है। इस रिपोर्ट में गरीबों का प्रतिशत वर्ष 2015–2016 के 24.85 से घटकर 2019–2021 में 14.96% पर आ गया है। यह रिपोर्ट आने के लगभग एक सप्ताह बाद ही 'यू.एन.डी.पी.' की जारी एक अध्ययन आख्या ने भी बताया कि विगत पंद्रह सालों में लगभग 41.5 करोड़ भारतवासियों को बहुआयामी गरीबी से ऊपर उठाने में भारत कामयाब रहा है,जो उल्लेखनीय है।

बहुआयामी गरीबी और इसके संकेतक–इधर के वर्षों में अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा बहुआयामी गरीबी की एक नई अवधारणा पर लगातार बल दिया जा रहा है। इसलिए बहुआयामी गरीबी के आशय को पहले समझना जरूरी है। विश्व के अधिकांश देश गरीबी को धन की कमी के रूप में परिभाषित करते हैं। किन्तु गरीबी का जीवन जी रहे लोग अपने अनुभवों को कुछ अधिक व्यापक रूप से व्यक्त करते हैं। एक व्यक्ति जो गरीब है वह एक ही समय में कई कठिनाइयों और परेशानियों से गुजरता है तथा उसे इन कठिनाइयों के कारण जीवन में अन्य लोगों के बराबर उन्नति केअवसर नहीं मिलते और इस नुकसान की भरपाई भविष्य में कभी नहीं हो सकती। जरुरत के समय धन की कमी से वह स्वास्थ्य, शिक्षा, समुचित पोषण और जीविका के साधनों से वंचित हो जाता है।ऐसी स्थिति में देखा गया है कि किसी व्यक्ति की गरीबी में कई तरह के आर्थिक और सामाजिक कारक जिम्मेदार होते हैं तथा अलग–अलग व्यक्तियों के लिए इन कारणों का महत्व अलग अलग होता है। मोटे तौर पर इन कारकों को स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण और जीवन स्तर के विभिन्न मानकों के रूप में विभक्त किया गया है। इन्हीं कारकों के कारण किसी व्यक्ति के जीवन में जो दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति लगातार कई वर्षों तक बनी रहती है उसी को बहुआयामी गरीबी की संज्ञा दी जा सकती है। उपर्युक्त कारकों के आधार पर बहुआयामी गरीबी को मापने के लिए कुछ संकेतकों का निर्माण किया गया है और इनके महत्व के आधार पर इन्हें अलग अलग भारांक (weightage) भी प्रदान किया गया है। इन कारकों में स्वास्थ्य, शिक्षाऔर जीवन स्तर हैं। स्वास्थ्य का आकलन गरीब परिवार के पोषण, बच्चों की मृत्यु दर और मातृ–स्वास्थ्य के संकेतकोंय शिक्षा का आकलन बच्चों की स्कूल अवधि व स्कूल में उपस्थिति से तथा जीवन स्तर का आकलन प्रयुक्त ईंधन, शौचालय, पेयजल आपूर्ति, विद्युत, आवास एवं बैंक खाते आदि संकेतकों से किया गया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने लगातार आठवीं बार पंद्रह अगस्त 2024 को ध्वजारोहण करते हुए अपने संबोधन में यह घोषणा करते हुए देश और प्रदेश वासियों को चौंका दिया कि वे अपने प्रदेश को भारत का पहला गरीबी मुक्त राज्य बनाएंगे।

गरीबी में कमी–उपर्युक्त कारकों, संकेतकों और निर्धारित मापदंडों के आधार पर नीति आयोग द्वारा बहुआयामी गरीबी और उसकी तीव्रता का सर्वेक्षण कराकर प्रदेशवार व जिलेवार गरीबी का सूचकांक (Index) तैयार कराया था। इस सर्वेक्षण के आधार पर वर्ष 2016 से 2021 तक पांच वर्षों के मध्य पूरे देश में बहुआयामी गरीबी में लगभग दस प्रतिशत की कमी आई है और 13.50 करोड़ लोग इस गरीबी से बाहर निकलने में कामयाब रहे हैं। बात उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य की करें तो अकेले यहां पर 3.43 करोड़ लोग गरीबी से ऊपर उठे हैं जो सभी राज्यों से अधिक हैं। नीति आयोग की इस रिपोर्ट का गहराई से अध्ययन करने पर हमें पता चलता है कि बीते पांच वर्षों में शहरों की तुलना में ग्रामीण आबादी के जीवन स्तर में अधिक तेजी से सुधार हुआ है और पूर्वांचल के जिलों में बहुआयामी गरीबी में उल्लेखनीय कमी परिलक्षित हुई है। आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट में उत्तर प्रदेश के बारे में कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल और शौचालय आदि की मूलभूत सुविधाओं में उत्साहवर्धक सुधार हुआ है। इस क्षेत्र के

महाराजगंज जिले में 29.64%,गोंडा में 29.55%, बलरामपुर में 27.90% और श्रावस्ती में 24.72% लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं। प्रदेश का एक और पिछड़ा क्षेत्र बुंदेलखंड भी है जहां चित्रकूट जिला गरीबी उन्मूलन में सबसे आगे है। यहां प्रश्नगत पांच वर्षों में 21.45% लोग गरीबी से बाहर निकलने में कामयाब रहे हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नजर डालें तो यहां पर गरीबों की संख्या कुछ धीमी गति से कम हुई है। निःसंदेह यह एक सुचिंतित आर्थिक नीतियों की उपलब्धि कही जाएगी। नीति आयोग ने पांच वर्षों के दौरान बहुआयामी गरीबी से मुक्ति के जो आंकड़े पेश किए हैं उन्हें देखते हुए शेष आबादी को गरीबी से ऊपर उठाने में अब अधिक समय नहीं लगना चाहिए।

ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार–नीति आयोग की इस रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में विगत पांच वर्षों में शहरी आबादी की तुलना में ग्रामीण आबादी के जीवन स्तर में अधिक तेजी से सुधार हुआ है। इस दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में जहां गरीबों की आबादी में 18% की गिरावट आई है वहीं शहरी इलाकों में इसका आंकड़ा महज 6% ही है।इस दौरान पूर्वांचल के जिलों में लोगों का जीवन स्तर तेजी से सुधरा है जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इसकी रफ्तार कुछ धीमी है। पश्चिम में रामपुर जिले की आबादी में अन्य जिलों की अपेक्षा गरीबी में कमी आने के साथ वहां के निवासियों में जीवन स्तर को लेकर सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चार जिलों रामपुर, बुलंदशहर, अलीगढ़ और बरेली के लोगों का जीवन स्तर पहले से बेहतर हुआ है। प्रदेश के गौतमबुद्धनगर जिले के निवासियों का जीवन स्तर अन्य जिलों की अपेक्षा सबसे अच्छा है।

जी डी पी में सुधार–एक रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के जीवन स्तर में सुधार के साथ पूरे उत्तर प्रदेश में आमजन की सुख सुविधा में भी सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।यह तथ्य जिलों में खेती बाड़ी से लेकर उद्योग, भवन निर्माण, स्वास्थ्य, परिवहन और शिक्षा समेत अठारह मानकों के आधार पर प्रदेश की जी डी पी के आकलन में सामने आया है।इस अध्ययन के आधार पर अब सरकार कम जी डी पी वाले जिलों के समग्र विकास पर और अधिक अपना ध्यान केंद्रित कर सकेगी। प्रदेश की जी डी पी बृद्धि में जिलों के हिस्सेदारी की बात करें तो स्वाभाविक रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिले सबसे आगे हैं। उधर पूर्वांचल के जिले मध्य यू पी से किंचित बेहतर स्थिति में हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र की स्थिति कमजोर है। यदि आंकड़ों के आधार पर देखें तो प्रदेश की जी डी पी में पश्चिमी उत्तर प्रदेश का हिस्सा लगभग आधा, 49.26%, पूर्वी प्रदेश का

हिस्सा 28.03%, मध्य यू पी का हिस्सा 17.54% और बुंदेलखंड क्षेत्र का हिस्सा महज 05.17% है। आमजन को उपलब्ध सुख सुविधा के पैमाने पर यदि संपन्नता की बात करें तो गौतमबुद्धनगर जिले में रहने वाले लोग प्रदेश में सबसे ज्यादा संपन्न कहे जा सकते हैं। सुविधाओं के पैमाने पर लखनऊ प्रदेश में दूसरे स्थान पर आता है।

वर्ष 2021 से 2022 के मध्य उत्तर प्रदेश की जी डी पी 1181361 करोड़ रुपए से बढ़कर 1916913.42 करोड़ रुपए हो गई है। आगरा, प्रयागराज, बुलंदशहर और लखनऊ की जी डी पी में इस दौरान किंचित गिरावट का रुख देखने को मिला है, लेकिन मेरठ जिले ने अपनी जी डी पी में बढ़ोत्तरी दर्ज किया है। जी डी पी की बढ़ोत्तरी और घटोत्तरी से यह पता चलता है कि किस जिले में आर्थिक विकास की संभावनाएं कितनी हैं और कहां कितने निवेश से तय समय में कितना विकास संभव हो सकता है।

किसी जिले की जी डी पी से तात्पर्य है एक साल के अंदर उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों का कुल योग। जिलों में फसल, पशुधन, वनोपज, मत्स्य, खनन, निर्माण, विद्युत, गैस, जलापूर्ति आदि के साथ उपयोगी सेवाओं, कारोबार, वाणिज्य, संपदा, वाहन, यातायात, बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, और श्रम आदि को निर्धारित मानक के आधार पर जोड़कर जी डी पी का निर्धारण किया जाता है।

कार्ययोजना–देश के सबसे अधिक जनसंख्या वाले प्रांत उत्तर प्रदेश को अगले एक साल के अंदर 'जीरो पावर्टी स्टेट' बनाने की यह योजना अति महत्वाकांक्षी होने के साथ साथ चुनौतीपूर्ण भी है। सरकार ने इस महायोजना का एक विस्तृत रोड मैप जारी कर दिया है। इसके अंतर्गत गरीबी का आकलन नये सिरे से अब दो स्तरों पर किया जाएगा। इस कार्य हेतु सर्वप्रथम कर्मचारियों को सर्वेक्षण के लिए सात दिनों में चयनित कर प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके पश्चात कार्य योजना के अनुसार प्रत्येक ग्राम पंचायत के 10 से 25 निर्धनतम परिवारों के बारे में सूचनाएं एकत्र की जाएंगी। निर्धनतम परिवारों के चयन के लिए त्रि–स्तरीय व हाइब्रिड पद्धति का उपयोग किया जाएगा। यह चयन प्रक्रिया अत्यंत पारदर्शी और निष्पक्ष होगी। प्रत्येक चरण में शामिल कर्मचारी, अधिकारी और ग्राम पंचायतों के पदाधिकारी इसके लिए पूरी तरह से जवाबदेह बनाए जाएंगे। इस चयन के आधार पर चिन्हित परिवारों को भोजन और वस्त्र के साथ साथ आवास, चिकित्सा सुविधा एवं अच्छी शिक्षा भी उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अलावा सुनिश्चित आय के उपयुक्त साधन भी उपलब्ध कराए जाएंगे।

उपर्युक्त निर्धनतम परिवारों का चयन करने के लिए प्रथम चरण में 'माप–अप मोबाइल एप' पर परिवारों की पहचान की जाएगी। चयन के चार मानकों में प्रथम आवास विहीनता व कच्चा मकान, दूसरा भूमिहीन कृषि मजदूर जिसका खेती के अलावा जीविका का अन्य कोई साधन न

हो।तीसरा दिहाड़ी मजदूर जिसे साल भर पर्याप्त काम उपलब्ध न होता हो। और चौथा जिन परिवारों में संसाधनों की कमी से साल भर तक सबका पेट भरने के लिए पर्याप्त राशन उपलब्ध न होता हो। दूसरे चरण में हर ग्राम पंचायत में एक ग्राम स्तरीय समिति गठित की जाएगी जिसमें कुल पांच सदस्य होंगे। इनमें ग्राम प्रधान, विद्यालय के प्रधानाध्यापक, सबसे पुराने दो ग्राम सहायता समूह के अध्यक्ष तथा पूर्व ग्राम प्रधान सम्मिलित होंगे। जहां पर ग्राम सहायता समूह गठित नहीं है, वहां पर गांव की आंगनबाड़ी संचालिका व स्वास्थ्य विभाग की आशाबहू को इसका सदस्य बनाया जाएगा। निर्धनतम परिवारों के अंतिम चयन में इस समिति के कम से कम तीन सदस्यों का एक मत होना आवश्यक होगा। इस संपूर्ण अभियान को एक साल के अंदर पूरा करने की योजना बनाई गई है। इस प्रकार गरीबी को प्रदेश में जड़ से समाप्त करने की योजना बनाने वाला उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य है।

देश के सबसे अधिक जनसंख्या वाले प्रांत उत्तर प्रदेश को अगले एक साल के अंदर 'जीरो पावर्टी स्टेट' बनाने की यह योजना अति महत्वाकांक्षी होने के साथ साथ चुनौतीपूर्ण भी है। सरकार ने इस महायोजना का एक विस्तृत रोड मैप जारी कर दिया है। इसके अंतर्गत गरीबी का आकलन नये सिरे से अब दो स्तरों पर किया जाएगा।

इस महत्वाकांक्षी योजना के सफल एवं समयबद्ध क्रियान्वयन हेतु मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सभी जिलाधिकारियों और आयुक्तों को पत्र लिखते हुए वीडियो कान्फ्रेंसिंग से भी कड़े निर्देश दिए गए हैं। समय समय पर विकासखंड वार प्रगति का अंकन करने के लिए इस हेतु एक समर्पित पोर्टल – http://zero & poverty.in भी लांच कर दिया गया है।

प्रथम लाभार्थी का चयन हुआ–प्रदेश के मुख्य सचिव ने जीरो पावर्टी स्कीम के तहत गोसाईंगंज, लखनऊ के सलौली ग्राम सभा में दीपावली के दिन रूबी नामक महिला को पहली लाभार्थी के रूप में चुना। मुख्य सचिव द्वारा रूबी से भेंट करने के बाद उसके पूरे परिवार से बात भी की। उन्होंने प्रदेश के सभी अधिकारियों से कहा कि प्रदेश के जमीनी हालात को बदलने के लिए वर्तमान सरकार की प्रतिबद्धता को साकार करने में प्राणपण से कार्य करें। जीरो पावर्टी स्कीम की टैगलाइन यह सुनिश्चित की गई है कि 'कोई भी न छूटे'। मुख्य सचिव ने इस अवसर पर जोर देते हुए कहा कि प्रदेश सरकार निचले स्तर के ग्रामीण इलाकों के कमजोर लोगों का जीवन स्तर सुधारने के लिए पूरी ताकत से काम कर रही है। उन्होंने सभी जिलों के अधिकारियों से अपील की कि वे सब ग्राउंड जीरो पर उतर कर स्थितियों का निरीक्षण करें और जरूरत मंद परिवारों को इस योजना का लाभ प्रदान करें।

ज्ञातव्य है कि इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के पच्चीस लाख गरीब परिवारों को चिन्हित कर उन्हें सरकार की अन्य कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने के साथ उनकी वार्षिक आय 125000 रुपए प्रति परिवार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। ◆

मो. : 9140852665

युवाओं के प्रति समर्पित सरकार, आगे बढ़ता मिशन रोजगार

—उपेन्द्र कुमार

युवा देश की आबादी का सबसे जीवंत और संसाधन पूर्ण हिस्सा है, इनकी देश के सामाजिक व आर्थिक सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी देश व प्रदेश के विकास के लिए युवाओं की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मिशन रोज़गार के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनाने के लक्ष्य के लिए तेज़ी के साथ आगे बढ़ रही है।

प्रदेश में विगत साढ़े 07 वर्षों में साढ़े 06 लाख युवाओं को सरकारी नौकरी प्रदान की गई है। ये युवा अपनी ऊर्जा तथा प्रतिभा का लाभ प्रदेश को प्रदान कर रहे हैं। प्रदेश विकास के पथ पर तेज़ी के साथ अग्रसर होता हुआ दिखाई दे रहा है।

युवाओं की ऊर्जा तथा सक्रिय भागीदारी से प्रदेश देश के विकास का ग्रोथ इंजन बनकर उभरा है। साढ़े 07 वर्ष पूर्व प्रदेश, देश की सातवीं बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता था। आज यह नम्बर दो की अर्थव्यवस्था बन चुका है।

प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मिशन रोज़गार के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनाने के लक्ष्य के लिए तेज़ी के साथ आगे बढ़ रही है।

राज्य सरकार ने समयबद्ध, निष्पक्ष व पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से प्रदेश के युवा ऊर्जा के प्रतीक प्रतिभाशाली युवाओं को प्रदेश शासन के विभिन्न विभागों का हिस्सा बनाया है। युवाओं को बिना किसी भेदभाव के तथा आरक्षण के नियमों का पालन करते हुए नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए हैं।

प्रदेश में उत्तर प्रदेश सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) विधेयक, 2024 के माध्यम से युवाओं की क्षमता तथा योग्यता के सामने बैरियर बनने वाले भ्रष्टाचारियों तथा बेईमानों से सख़्ती से निपटने का प्राविधान किया गया है।

प्रदेश सरकार रोज़गार सृजन के लिए रोटेसटीनरोडान की बिग पुश

थियरी की अवधारणा पर चलकर निवेश आकर्षित करने के लिए कई तरह के सुधारात्मक कदम उठा रही है। वर्ष 2017 से पूर्व प्रदेश व्यवसाय की सुगमता में 14वें नम्बर पर था। आज प्रदेश अचीवर्स स्टेट के रूप में स्थापित हो चुका है। इसके लिए प्रदेश सरकार द्वारा कई रिफॉर्म किए गए। परिणामस्वरूप प्रदेश को 40 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इसके माध्यम से लगभग डेढ़ करोड़ युवाओं को नौकरी तथा रोज़गार के अवसर प्राप्त होंगे।

प्रदेश में उद्यम पुनर्जीवित हो रहे हैं। एक जनपद, एक उत्पाद योजना पूरे देश की ब्रांड बन चुकी है। हर जनपद का अपना विशेष उत्पाद है। इसके माध्यम से नए रोज़गार सृजित हुए हैं तथा लाखों लोगों को रोजगार मिला है। इसके माध्यम से प्रदेश लगातार विकास की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहा है।

प्रदेश सरकार ने रोज़गार सृजन हेतु 'मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान' के रूप में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस अभियान के अन्तर्गत प्रतिवर्ष 01 लाख युवाओं को बैंकों से ऋण दिलाकर वित्तीय अनुदान दिया जाएगा, जिससे प्रतिवर्ष 01 लाख सूक्ष्म उद्यम प्रतिवर्ष स्थापित हो सकेंगे। इस प्रकार आगामी 10 वर्षों में 10 लाख (एक मिलियन) युवा स्वरोज़गार से जुड़ सकेंगे। यह अभियान स्वरोज़गार सृजन के प्रयासों में बड़ी भूमिका का निर्वहन करेगा।

राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2019 में विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना प्रारम्भ कर परम्परागत कार्यों से जुड़े विभिन्न समुदायों के लोगों के प्रोत्साहन के लिए उन्हें प्रशिक्षण, मानदेय के साथ टूलकिट उपलब्ध कराने का कार्य किया जा रहा है। इन्हें आज की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षित करते हुए डिजाइनिंग व मार्केटिंग से जोड़ा जा रहा है तथा सस्ती दर में लोन भी उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रदेश के 02 करोड़ युवाओं को तकनीकी दृष्टि से सक्षम बनाने के लिए स्मार्टफोन/टैबलेट्स वितरण का अभियान निरंतर जारी है। राज्य के विभिन्न जनपदों में रोज़गार तथा ऋण मेलों का आयोजन किया जा रहा है ताकि युवा अपने मनचाहे रोज़गार से जुड़ सकें।

प्रदेश में जितनी निष्ठा व ईमानदारी के साथ नियुक्ति प्रक्रिया चल रही है यदि उतनी ही निष्ठा व ईमानदारी के साथ प्रत्येक कार्मिक कार्य करेगा, तो प्रदेश शीघ्र ही देश की नम्बर एक अर्थव्यवस्था के रूप में सबके सामने होगा। जिसके परिणामस्वरूप हर हाथ को काम तथा हर चेहरे पर खुशहाली होगी। डबल इंजन सरकार इसी उद्देश्य के साथ बिना किसी भेदभाव के कार्य कर रही है। ◆

मो. : 6306959511

अनुपूरक बजट पर सदन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

–सीमा राय

विधानसभा के मानसून सत्र में अनुपूरक बजट पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने उद्‌बोधन की शुरुआत में कहा कि हमें विरासत में जैसा यूपी मिला था और जैसा यूपी आज है, वो सबके सामने है। हमने अटल जी की पंक्तियों से प्रेरणा प्राप्त की है। अटल जी ने लिखा था कि ''मनुष्य को चाहिए कि वह परिस्थितियों से लड़े, एक स्वप्न टूटे, तो दूसरा गढ़े...'' उत्तर प्रदेश आज रेवेन्यू सरप्लस स्टेट बन चुका है और अपनी ज्यादातर आवश्यकताओं की पूर्ति खुद करने में सक्षम हो चुका है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 5 ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के संकल्प को पूरा करने और प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनाने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए 12 हजार 209 करोड़, 93 लाख रुपए का अनुपूरक बजट लाया गया है। बीते फरवरी माह में वित्तीय वर्ष 2024–25 के लिए पारित मूल बजट की 44 फीसदी धनराशि जारी हो चुकी है और 20 फीसदी खर्च भी हुए हैं।

70 हजार करोड़ रुपए का डीबीटी के जरिए हुआ हस्तांतरण

मुख्यमंत्री ने बताया कि अब वित्तीय वर्ष 2024–25 के मूल बजट का आकार साढ़े सात लाख करोड़ रुपए का हो चुका है। यह 2015–16 के बजट के आकार से दोगुना है। यूपी की बढ़ती आवश्यकताओं के अनुरूप प्रदेश के बजट का दायरा बढ़ाया गया है। 11 विभागों के माध्यम से 196 योजनाओं के लिए 70 हजार करोड़ रुपए का डीबीटी के जरिए हुआ हस्तांतरण है, जो गरीब जनता के खातों में सीधे ट्रांसफर हुआ है। डीबीटी कैसे एक गरीब को भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था देने में सहायक होती है, यह उसका बड़ा उदाहरण है। फरवरी में मूल बजट पारित करके अप्रैल में वित्तीय वर्ष शुरू होते ही हमने उसका उपयोग करना शुरू कर दिया। वर्ष 2024–25 का मूल बजट 7 लाख 36 हजार 437 करोड़ 71 लाख रुपए का था। हालांकि वित्तीय वर्ष शुरू होते ही आम चुनाव का वक्त आ गया, इसके बावजूद विभिन्न विभागों के लिए बजट का औसतन 44 फीसदी धनराशि रिलीज हुई है और 20 फीसदी से अधिक खर्च भी हुआ है। हमने बिना भेदभाव के समाज के सभी वर्गों के लिए सरकार की कार्ययोजना को आगे बढ़ाया है। जो नए मद बनाए गये हैं उसके लिए इस नये अनुपूरक बजट की आवश्यकता पड़ी, इसलिए 12 हजार 209 करोड़, 93 लाख का अनुपूरक बजट मानसून सत्र में लाया गया है। इसके बाद हमारा इस वित्तीय वर्ष में साढ़े सात लाख करोड़ रुपए का बजट हो गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब हम सत्ता में आए थे तो हमारी अर्थव्यवस्था देश में छठे–सातवें नंबर पर थी। अब यूपी ने अपनी इकोनॉमी को देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना लिया है। हम अब अगले तीन और पांच साल का रोडमैप बनाकर कार्य कर रहे हैं। तमिलनाडु के त्रिशूर में यूपी के दो लाख लोग काम करते थे। वहां से बड़ी

संख्या में लोग अपने प्रदेश में वापस आ गये हैं, क्योंकि अब उन्हें अपने प्रदेश में रोज़गार मिल रहा है। नेशनल जीडीपी में पहले हम 6–7 फीसदी की हिस्सेदारी रखते थे, जबकि आज ये शेयर 9 से 10 फीसदी तक पहुंच गया है।

हर निवेश नया रोज़गार देता है, यह विकास भी लेकर आता है

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में शिक्षा, खेल व अन्य कार्यों के लिए धनराशि की व्यवस्था की गई है। कौशल विकास में युवाओं की ट्रेनिंग के लिए 200 करोड़ का प्रावधान किया है। रोज़गार प्रशिक्षण के साथ–साथ 'प्रोजेक्ट प्रवीण' के लिए 100 करोड़ की व्यवस्था की गई है। 150 आईटीआई को टाटा कंसल्टेंसी के साथ विश्व स्तरीय स्किल डेवलपमेंट सेंटर के रूप में विकसित करने की कार्रवाई को आगे बढ़ाया गया है। इसमें 23 प्रकार के न्यू एज कोर्स प्रारंभ करने जा रहे हैं, यह आज की आवश्यकता के अनुरूप ग्लोबल मार्केट व इंडस्ट्री की डिमांड है।

जहां एक भी विश्वविद्यालय नहीं था, वहां सरकार ने निर्माण कराया

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जहां कोई विश्वविद्यालय नहीं था, वहां राज्य सरकार ने विश्वविद्यालय बनाया। आजमगढ़ में महाराजा सुहेलदेव के नाम पर विवि का निर्माण हो चुका है। यह विश्वविद्यालय स्वयं के भवन में संचालित है। आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले महाराजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर अलीगढ़ में विश्वविद्यालय में क्रियाशील हो चुका है। मां शाकंभरी के नाम पर सहारनपुर में विश्वविद्यालय का निर्माण किया गया है। यह विश्वविद्यालय भी क्रियाशील हो चुका है। चार नए विश्वविद्यालय बनने की ओर अग्रसर हैं। मुरादाबाद में विश्वविद्यालय बनाने जा रहे हैं। सारी औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं। देवीपाटन मंडल में निजी या सरकारी स्तर पर विश्वविद्यालय नहीं था, वहां मां पाटेश्वरी के नाम पर विवि का निर्माण करने जा रहे हैं। मीरजापुर मंडल में भी विश्वविद्यालय नहीं था। यहां मां विंध्यवासिनी और कुशीनगर में महात्मा बुद्ध के नाम पर कृषि विश्वविद्यालय के निर्माण के कार्यक्रम को हमारी सरकार ने आगे बढ़ाने का कार्य किया है। वर्ष 2001 में जगदगुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट प्रारंभ हुआ था। विश्वविद्यालय के पास आर्थिक संकट था। समय के अनुरूप अपनी गति को बढ़ाने में विवि कठिनाई महसूस कर रहा था। इस विवि को राज्य विश्वविद्यालय के अधीन लेकर सरकार ने दिव्यांगजनों व सामान्य बच्चों के लिए संचालन प्रारंभ कर दिया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में शिक्षा, खेल व अन्य कार्यों के लिए धनराशि की व्यवस्था की गई है। कौशल विकास में युवाओं की ट्रेनिंग के लिए 200 करोड़ का प्रावधान किया है। रोज़गार प्रशिक्षण के साथ–साथ 'प्रोजेक्ट प्रवीण' के लिए 100 करोड़ की व्यवस्था की गई है। 150 आईटीआई को टाटा कंसल्टेंसी के साथ विश्व स्तरीय स्किल डेवलपमेंट सेंटर के रूप में विकसित करने की कार्रवाई को आगे बढ़ाया गया है। इसमें 23 प्रकार के न्यू एज कोर्स प्रारंभ करने जा रहे हैं, यह आज की आवश्यकता के अनुरूप ग्लोबल मार्केट व इंडस्ट्री की डिमांड है।

केडी सिंह बाबू के नाम पर बाराबंकी में संग्रहालय बनाएगी प्रदेश सरकार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के नाम पर मेरठ में प्रदेश के पहला खेल विश्वविद्यालय का कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है। साथ ही कई बार भारतीय हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले महान खिलाड़ी केडी सिंह बाबू के सम्मान में भी सरकार खड़ी है। केडी सिंह बाबू के बाराबंकी स्थित आवास को लेकर कुछ विवाद हुआ था। न्यायालय ने उनके पैतृक आवास को नीलाम करने का आदेश दिया, लेकिन प्रदेश सरकार ने कहा कि जिन्होंने देश के लिए योगदान दिया है, वर्तमान पीढ़ी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनकी स्मृतियों को बचाए रख सके। सरकार इसके लिए धनराशि देकर उनके आवास व प्रॉपर्टी को बचाते हुए संग्रहालय बनाएगी। यहां हॉकी के लिए किए गए उनके योगदान से भावी पीढ़ी भी अवगत होगी। ग्रामीण क्षेत्र में स्टेडियम को लेकर सरकार ने 100 करोड़ रुपये की व्यवस्था इस अनुपूरक बजट में किया है।

देश की स्पीड से कदम मिला रहा है उत्तर प्रदेश

उन्होंने बताया कि जो 10 महत्वपूर्ण सेक्टर बनाए गए हैं, उनमें इंफ्रास्ट्रक्चर का महत्वपूर्ण रोल है। उत्तर प्रदेश के अंदर एक्सप्रेसवे, इंटरस्टेट कनेक्टिविटी, हाईवे का एक बेहतरीन जाल बिछ चुका है। हमारे पास पहले से यमुना एक्सप्रेसवे था। 2017 में जब हम आए थे, तब आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे अपने अंतिम चरण में था। पिछले 7 वर्ष के अंदर हमने कई एक्सप्रेसवे बनाए हैं, जिसमें स्टेट गवर्नमेंट के साथ ही केंद्र सरकार ने भी सहयोग किया। इसमें दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे, पूर्वांचल एक्सप्रेसवे, बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे, दिल्ली आगरा एक्सप्रेसवे शामिल है। इसके अलावा गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे, बलिया लिंक एक्सप्रेसवे के साथ ही चित्रकूट लिंक एक्सप्रेसवे पर कार्य हो रहा है। शाहजहांपुर से फर्रूखाबाद होते हुए आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे को जोड़ने के लिए एक नए एक्सप्रेसवे पर कार्य जल्द शुरू हो रहा है, जिसके लिए सर्वे पूरा हो गया है।

आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे से पूर्वांचल एक्सप्रेसवे को जोड़ने की कार्यवाही को भी सरकार आगे बढ़ा रही है। इंटरस्टेट कनेक्टिविटी को फोरलेन की कनेक्टिविटी से जोड़ा जा रहा है, ताकि उत्तर प्रदेश आगंतुकों का स्वागत करता हुआ दिखाई दे।

एयर कनेक्टिविटी के साथ ही वाटरवे पर भी हो रही है कार्यवाही

उन्होंने कहा कि हर जिला मुख्यालय, तहसील मुख्यालय को फोर लेन और ब्लॉक मुख्यालय को टू लेन के साथ हम जोड़ सकें इस पर कार्य तेज़ी से हो रहे हैं या हो चुके हैं। वर्ल्ड क्लास हाइवे का निर्माण यहां हो रहा है। लखनऊ–कानपुर के बीच में ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे बन रहा है। वहीं, उत्तर प्रदेश में एयर कनेक्टिविटी के लिए भी कार्य हुए हैं। अब तक हमारे 4 इंटरनेशनल एयरपोर्ट और 11 डॉमेस्टिक एयरपोर्ट क्रियाशील हैं और बहुत जल्द ही हम लोग 5वें इंटरनेशनल एयरपोर्ट के रूप में जेवर एयरपोर्ट को भी क्रियाशील करने जा रहे हैं। यह एशिया का सबसे बड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट में से एक होने जा रहा है जो उत्तर प्रदेश की इकॉनमी के लिए बहुत बड़ी बात होगी। उत्तर प्रदेश के अंदर हम लोगों ने वाटरवे का निर्माण भी किया है। वाराणसी से हल्दिया के बीच में वाटरवे सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है, अयोध्या से हल्दिया के बीच में वाटरवे के सर्वे की कार्यवाही को भी हम आगे बढ़ा रहे हैं। उत्तर प्रदेश उन राज्यों में है जिसने वाटरवे अथॉरिटी की स्थापना करके जलमार्गों की संभावनाओं को भी गति देने की कार्यवाही को अंजाम दिया है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के अंदर बुंदेलखंड में हम बीडा का निर्माण करने जा रहे हैं। 36 हजार एकड़ लैंड में इसका

निर्माण हो रहा है। 46 वर्ष के बाद नोएडा की तर्ज़ पर एक नया औद्योगिक शहर बसाने की कार्यवाही और बुंदेलखंड क्षेत्र के कायाकल्प की दिशा में सरकार के प्रयास का यह हिस्सा है। दिल्ली और मेरठ के बीच रैपिड रेल शुरू हुई है। पहले दिल्ली और मेरठ के बीच की दूरी कम होने के बाद भी साढ़े तीन से चार घंटे का समय लगता था। आज 12 लेन का एक्सप्रेसवे भी हो गया और रैपिड रेल भी प्रारंभ हो गई है। अब यह दूरी 40 से 45 मिनट में पूरा की जा सकता है।

उद्योगों को किया प्रोत्साहित तो 2 लाख करोड़ से ऊपर पहुंचा एक्सपोर्ट

मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में सरकार की ओर से किए जा रहे प्रयासों पर सीएम योगी ने कहा कि एफडीआई की पॉलिसी के साथ ही हमने 27 सेक्टोरल पॉलिसी भी बनाई हैं। एमएसएमई के जो उत्पाद हैं उसकी मार्केटिंग और ब्रांडिंग के लिए इंटरनेशनल ट्रेड शो का आयोजन भी गत वर्ष से हम कर रहे हैं। परंपरागत उत्पादों के लिए ओडीओपी की भी योजना लेकर आए हैं। हस्तशिल्पियों के लिए पीएम विश्वकर्मा योजना और विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के तहत उनकी ट्रेनिंग कराई जा रही है। उनको प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, मुख्यमंत्री स्वरोज़गार योजना से जोड़ने के साथ ही आर्थिक स्वावलंबन की ओर अग्रसर करने की ओर कार्य हुआ है। निजी क्षेत्र में भी औद्योगिक पार्क का निर्माण हो, इसके लिए 11 प्लेज पार्क के निर्माण की कार्यवाही को हम स्वीकृति दे चुके हैं। रेडीमेड गारमेंट्स के लिए एक नई योजना के साथ ही लखनऊ–हरदोई के बीच में पीएम श्री टेक्सटाइल पार्क के निर्माण की कार्यवाही हो रही है, जो लगभग 1 हजार एकड़ क्षेत्र में निर्मित होने जा रही है। इसमें अत्याधुनिक टेक्सटाइल तकनीक का उपयोग हो रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के अंदर ओडीओपी की योजना को प्रोत्साहित करने का परिणाम यह है कि 2017 के पहले यह दम तोड़ रहा था उसकी कोई ब्रांडिंग नहीं थी, कोई प्रोत्साहन नहीं था। आज हमने उसको प्रोत्साहित किया है। इसी का परिणाम है कि पहले उत्तर प्रदेश का जो एक्सपोर्ट मात्र 86 हजार करोड़ था वो आज बढ़कर 2 लाख करोड़ रुपए से ऊपर का हुआ है। ये बताता है कि एक सही दिशा में सरकार के कदम आगे बढ़े हैं।

निवेश गतिविधियों से 60 लाख युवाओं को रोज़गार से जोड़ने में मिली सफलता

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में फरवरी 2023 में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट किया था। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के दौरान और बाद में हमारे पास कुल मिलाकर 40 लाख करोड़ से अधिक के प्रस्ताव प्राप्त हुए। ये निवेश के प्रस्ताव यदि आगे बढ़ते हैं तो इससे लगभग सवा करोड़ से अधिक नौजवानों को नौकरी प्राप्त होती है। फरवरी 2024 में ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी को संपन्न किया गया, जिसमें दस लाख करोड़ रुपए की परियोजनाओं का शिलान्यास हुआ। पिछले सात वर्ष के अंदर लगभग 16 से 20 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावों को ज़मीन पर उतारने में सफलता प्राप्त हुई है। लगभग 60 लाख से अधिक नौजवानों को रोज़गार से जोड़ने में मदद मिली है। ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के बाद से अब तक एक लाख करोड़ से अधिक की परियोजनाओं ने प्रोडक्शन प्रारंभ किया है। यह इस बात का संकेत है कि ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में एक बेहतरीन पहल हुई है और इसका लाभ हमारा उद्यमी ले रहे हैं और इसके माध्यम से प्रदेश के बेरोज़गार नौजवानों को रोजगार की संभावनाओं को आगे बढ़ाने में मदद मिल रही है।

प्रदेश को डाटा सेंटर हब के रूप में, लखनऊ को एआई सिटी के रूप में स्थापित किया जा रहा है। इनोवेशन फंड के गठन की कार्यवाही को आगे बढ़ाया जा रहा है। शासकीय कार्यालयों के साथ साथ ग्राम पंचायतों में भी वाई फाई की सुविधा उपलब्ध करा सकें, ई ऑफिस की प्रणाली को विकसित कर सकें, नई इंडस्ट्रियल पॉलिसी के तहत निवेशकों को इंसेंटिव प्राप्त हो सके, इसके लिए भी हमने इस अनुपूरक बजट में प्रावधान किया है।

जनता को मिले अनवरत बिजली, अनुपूरक बजट में 2 हजार करोड़ का प्राविधान

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में जितना बड़ा निवेश आ रहा है और जितनी बड़ी आबादी है उसके अनुरूप हम अपने आप को अपग्रेड कर रहे हैं। जब हम 2017 में सत्ता में आए थे तब 1 लाख 21 हजार मजरों में बिजली नहीं पहुंची थी। हमने इनका विद्युतीकरण किया। 1 करोड़ 76 लाख परिवार को निःशुल्क बिजली कनेक्शन दिये गये। 14 लाख से

अधिक किसानों के पास ट्यूबवेल के कनेक्शन थे, मगर बिजली के बिल का भुगतान वो नहीं कर पा रहे थे। हमने अप्रैल 2023 से सरकारी और निजी ट्यूबवेल के लिए धनराशि का प्रावधान करते हुए बिजली बिल माफ कर दी है। इससे पहले के उनके बकाए बिल के लिए हम वन टाइम सेटेलमेंट (ओटीएस) स्कीम लेकर आए हैं। इसके बाद हम उन्हें सोलर पैनल से जोड़ देंगे, जिससे उनके लिए परमानेंट व्यवस्था बन जाएगी। अब तक 60 हजार से अधिक सोलर पैनल किसानों को ट्यूबवेल के लिए उपलब्ध कराई गई है।

सरयू नहर योजना के लिए मिशन मोड में काम किया

मुख्यमंत्री ने कहा कि सन 1972 में सरयू नहर राष्ट्रीय परियोजना बनी थी। ये योजना तब से लटकी हुई थी। उस वक्त योजना आयोग ने इसका डीपीआर बनाया और लागत 100 करोड़ रुपए रखी। हमारी सरकार बनने के बाद इस योजना पर हमने मिशन मोड में काम किया। भूमि अधिग्रहण किया गया। प्रधानमंत्री जी से बात किया, उन्होंने पीएम कृषि सिंचाई योजना के जरिए इसके लिए धनराशि उपलब्ध कराई। तब जाकर 2021 में ने प्रधानमंत्री जी ने इसका लोकार्पण किया। इसके बाद नेपाल से सटे बहराइच, बलरामपुर, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, श्रावस्ती, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, संत कबीर नगर जनपद के 14 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया है। बीते सात साल में 22 लाख हेक्टेयर भूमि के अतिरिक्त सिंचाई की व्यवस्था की गई है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के नाम पर मेरठ में प्रदेश के पहला खेल विश्वविद्यालय का कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है। साथ ही कई बार भारतीय हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले महान खिलाड़ी केडी सिंह बाबू के सम्मान में भी सरकार खड़ी है।

2016 में प्रदेश में बिजली की डिमांड 16 हजार मेगावाट प्रतिदिन की थी, जो आज बढ़कर 31 से 32 हजार मेगावाट तक पहुंच चुकी है। इसके बावजूद अनवरत बिजली देने की कोशिश पॉवर कॉरपोरेशन की ओर से की जा रही है। 2017 से पहले बिजली के लिए पर्याप्त इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं था, गांवों में बिजली नहीं थी, उद्योग नहीं थे, ट्यूबवेल के कनेक्शन नहीं दिये जा रहे थे। आज हमने बिजली के कनेक्शन दिये, उद्योग लगाए, बिजली की व्यवस्था बनाई है। जिला मुख्यालयों को 24 घंटे, तहसील मुख्यालय को 20 से 22 घंटे और ग्रामीण इलाकों को 18 से 20 घंटे बिजली दे रहे हैं।

उपभोक्ताओं के हितों को ध्यान में रखकर जवाबदेही तय की गई है

पॉवर कॉर्पोरेशन को सरकार संबल दे रही है। 46 हजार करोड़ रुपए हम सब्सिडी के रूप में कॉर्पोरेशन को दे रहे हैं। ये पैसा अगर प्रदेश के विकास में लगे तो रिज़ल्ट कुछ और होंगे, मगर ये अभी की आवश्यकता है। इस सप्लिमेंट्री डिमांड में 2 हजार करोड़ रुपए पॉवर कॉर्पोरेशन को उपलब्ध कराने का प्रावधान है, ताकि अनवरत बिजली प्रदेश की जनता को मिल सके। उपभोक्ताओं के हितों और समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हर डिस्कॉम की जिम्मेदारी तय की गई है। टोल फ्री नंबर 1912 को एक्टिव रखने के निर्देश हैं और हर फीडर की जवाबदेही तय की गई है। यह संक्रमण काल है। ऊर्जा सेक्टर में इन्फ्रास्ट्रक्चर में बड़े बदलाव हो रहे हैं, तो थोड़ी समस्या आ सकती है। हम इसके स्थाई समाधान के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

सीएम ने यूपी में घटे अपराधों का किया जिक्र

मुख्यमंत्री ने एनसीआरबी के आंकड़ों को गिनाते हुए 2016 से 2024 के तुलनात्मक अंतर को बताकर यूपी में अपराधों में आई कमी की तरफ सदन का ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने बताया कि डकैती में 86.47, लूट में 78. 17, हत्या में 43.21, बलवा में 67.42, ग्रह भेदन 4.31, फिरौती के लिए अपहरण में 70 फीसदी की कमी आई है। दहेज मृत्यु दर में 17.43, बलात्कार में 25.30, शीलभंग में 16.56, अपहरण में 0.17 फीसदी की कमी आई है। महिलाओं के विरुद्ध घटित अपराधों में राष्ट्रीय औसत पर नजर डालें तो उत्तर प्रदेश में 2017 से 2022 तक महिलाओं के प्रति अपराध बहुत कम हुए हैं। यूपी में निरोधात्मक कार्रवाई के तहत शस्त्र अधिनियम के तहत 2016 की तुलना में 2024 में 4.45 प्रतिशत, एनडीपीएस में 14.98 फीसदी, आबकारी अधिनियम के

अंतर्गत 57.95 प्रतिशत, गुंडा अधिनियम 70.69, गैंगस्टर के तहत 15.81 फीसदी अधिक कार्रवाई हमारी सरकार ने की है। प्रदेश सरकार द्वारा बढ़ाए गए कदम हर किसी के सामने है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने बाबा साहब के पंच तीर्थों का निर्माण कराया। मध्य प्रदेश के महू में स्थित उनकी जन्मस्थली पर भव्य स्मारक हो या इंग्लैंड के जिस मकान से बाबा साहब अम्बेडकर ने उच्च शिक्षा अर्जित की थी, इंडिया हाउस के रुप में उसे प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्थापित किया। बाबा साहब अम्बेडकर ने दिल्ली के जिस मकान में रहते हुए अपना सार्वजनिक जीवन व्यतीत किया था, प्रधानमंत्री मोदी जी ने वहां पर स्मारक बनाया। नागपुर में जिस स्थल पर बाबा साहब ने बौद्ध दीक्षा प्राप्त की थी, वहां पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने ही स्मारक बनाया। मुंबई में स्थित बाबा साहब अम्बेडकर की भूमि पर स्मारक बनाने का कार्य प्रधानमंत्री मोदी जी और महाराष्ट्र की भाजपा की सरकार ने किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि वर्ष 2016 में भारत सरकार उत्तर प्रदेश को 20 कृषि विज्ञान केंद्र दे रही थी, तब तत्कालीन सरकार ने उसे नहीं लिया। वर्ष 2017 में हमारी सरकार बनी, तब हमने कृषि विज्ञान केंद्रों को प्राप्त करते हुए उन्हें सुदृढ़ बनाने का कार्य किया। इन केंद्रों पर आज किसानों को ट्रेनिंग दी जा रही है, डेमोस्ट्रेशन हो रहे हैं, बेहतरीन बीज कैसे मिले, फसल की अच्छी क्वालिटी कैसे हो, कौन सी फसल कब बोई जाए, इसकी जानकारी दी जा रही है। यहां पर लैबोरेट्री की व्यवस्था की गई है। किसानों के उत्पाद की जांच करके उसके सर्टिफिकेशन की व्यवस्था की जा रही है।

दलहल-तिलहन के उत्पादन में हुई वृ), श्रीअन्न को दिया गया बढ़ावा

मुख्यमंत्री ने कहा कि बीते 7 साल में दलहन में 36 प्रतिशत और तिलहन में 127 फीसदी की वृद्धि हुई है। हम फसलों के विविधीकरण की दिशा में आगे बढ़े हैं। एग्रोटेक के माध्यम से दलहन तिलहन के साथ ही श्रीअन्न को बढ़ावा दिया गया है। पहले हम इसे मोटा अनाज बताकर चिढ़ाते थे। आज पूरी दुनिया में इसकी डिमांड बढ़ी है। दुनिया कह रही है कि जीवित रहना है तो श्रीअन्न खाओ। आज हर बड़े होटल में श्रीअन्न मिल रहा है। प्रदेश के 75 जनपदों में डिजिटल क्रॉप सर्वे के माध्यम से फसल उत्पादन का आंकलन करने वाला देश का पहला राज्य यूपी बना है। प्रदेश में 9 लाख 39 हजार किसानों को जोड़ते हुए 3406 एफपीओ का गठन किया गया है। 529 फॉर्म मशीनरी, 472 वेयर हाउस, 100 सीड प्रोसेसिंग यूनिट का संचालन हम कर रहे है। इन यूनिट्स के माध्यम से वार्षिक टर्न ओवर 629 करोड़ रुपए अर्जित किये जा रहे हैं। प्रदेश में दो करोड़ 62 लाख अन्नदाता पीएम किसान सम्मान निधि से लाभान्वित हो रहे हैं। प्रत्येक लाभार्थी किसान को प्रतिवर्ष 6 हजार रुपए दिये जा रहे है।

सदन में जब सीएम योगी ने कहा- 'मैं यहां नौकरी करने नहीं आया हूं'

विधानसभा के मॉनसून सत्र के दौरान एक वक्त ऐसा भी आया जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राजनीति में आने के अपने उद्देश्य के बारे में भी सदन के सदस्यों को बताया। साथ ही उन्होंने कहा कि ''मैं यहां नौकरी करने नहीं

आया हूं।'' इस दौरान उन्होंने यह भी साफ किया कि राजनीति में उन्हें कोई प्रतिष्ठा नहीं चाहिए।

विधानसभा में अनुपूरक बजट पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि राजनीति में जनता की सेवा और सुरक्षा ही सबसे बड़ा धर्म है। प्रदेश के नौजवानों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले, बेटी और व्यापारी की सुरक्षा में सेंध लगाने वाले और अराजकता फैलाकर आम आदमी का जीवन मुहाल करने वाले लोगों से लड़ने के लिए आया हूं। जो ऐसा करेगा वो भुगतेगा भी। ये हमारी सामान्य लड़ाई नहीं है, न ही ये प्रतिष्ठा की भी लड़ाई नहीं है। मुझे प्रतिष्ठा प्राप्त करनी होती तो इससे ज़्यादा प्रतिष्ठा मुझे अपने मठ में मिल जाती। उन्होंने बुल्डोज़र पर बोलते हुए कहा कि बुल्डोज़र निर्दोष के लिए नहीं बल्कि अपराधियों के लिए है। बुल्डोज़र से सिर्फ अपराधी डरते हैं और उन्हें डरना भी चाहिए।

प्रदेश में दोगुने से ज्यादा बढ़ीं एमबीबीएस की सीटें

विधानसभा में अनुपूरक बजट पर चर्चा करते हुए सीएम योगी ने प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था और उनकी उपलब्धियों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश ने 7 वर्षों में एमबीबीएस की सीटों को दुगुना करने में सफलता प्राप्त की है तो वहीं इंसेफेलाइटिस और कोरोना जैसी बीमारियों को समाप्त करने में यूपी ने खुद को देश के सामने एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रदेश के अंदर स्वास्थ्य के क्षेत्र में अगर आप देखेंगे तो लोगों को बेहतरीन लाभ मिला है। पहले कोई सोचता था कि सिद्धार्थनगर में भी मेडिकल कॉलेज की स्थापना होगी। कोई सोचता था कि देवरिया, अयोध्या, गोंडा, बहराइच, बलरामपुर, सुल्तानपुर, सोनभद्र, गाजीपुर, चंदौली जैसे जनपदों में भी मेडिकल कॉलेज शुरू होगा। जहां बीमारियां हर वर्ष उनको निगलती थीं। इंसेफेलाइटिस से डेढ़ से दो हजार बच्चों की मौत इसी सीजन में होती थी। मरने वाले बच्चे कौन थे, या तो दलित थे या फिर अल्पसंख्यक समुदाय के थे। हमारी सरकार ने अंतर्विभागीय और केंद्र सरकार के साथ समन्वय से बेहतरीन प्रयास किया और आज इंसेफेलाइटिस समाप्त हो गया। ये देश के लिए एक मॉडल है। डेंगू वाराणसी से लेकर बलिया तक, चिकनगुनिया बुंदेलखंड के क्षेत्र में, कालाजार बिहार से सटे हुए जनपदों में अपना कहर बरपाता था। ◆

मो. : 9415132728

धार्मिक पर्यटन बना अर्थ व्यवस्था का आधार

–डॉ. शिव राम पाण्डेय

विगत कुछा वर्षों में धार्मिक पर्यटन उत्तर प्रदेश की अर्थ व्यवथा का आधार बनता जा रहा है। राज्य की अर्थ व्यवथा का प्रमुख आधार पहले आबकारी, राजस्व और स्टाम्प पंजीयन विभाग था मगर मौजूदा सरकार ने वन ट्रिलियन इकोनामी का लक्ष्य लेकर पर्यटन को उद्योग का दर्ज़ा देकर सूबे में पर्यटन को बढ़ावा दिया जिससे उत्तर प्रदेश में पर्यटकों की बाढ़ आ गई। वर्ष 2024 में जहाँ अयोध्या धार्मिक पर्यटन का केन्द्रबिन्दु बन कर करोड़ों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में कामयाब रहा वहीं वर्ष 2025 कुम्भ मेले के कारण प्रयागराज पर्यटन का केन्द्र बिन्दु बनने जा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार वर्ष 2025 में 80 करोड़ पर्यटकों के स्वागत की तैयारी कर कर रही है जिसमें 50 करोड़ पर्यटक तो कुम्भ मेले में ही आने की उम्मीद की जा रही है। प्रदेश के धार्मिक स्थलों की कनेक्टविटी बढ़ने, सुन्दरीकरण, विकास और जन सुविधाओं के विस्तार से उत्तर प्रदेश में पर्यटन उद्योग को पर लग गये। धार्मिक पर्यटन उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग और अर्थ व्यवस्था का भी आधार बन गया।

सरकार ने वन ट्रिलियन इकोनामी का लक्ष्य लेकर पर्यटन को उद्योग का दर्ज़ा देकर सूबे में पर्यटन को बढ़ावा दिया जिससे उत्तर प्रदेश में पर्यटकों की बाढ़ आ गई। वर्ष 2024 में जहाँ अयोध्या धार्मिक पर्यटन का केन्द्रबिन्दु बन कर करोड़ों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में कामयाब रहा वहीं वर्ष 2025 कुम्भ मेले के कारण प्रयागराज पर्यटन का केन्द्र बिन्दु बनने जा रहा है।

भगवान राम, कृष्ण और बुद्ध की जन्मभूमि उत्तर प्रदेश सनातन धर्म के लिए सबसे अधिक उर्वरा भूमि भी रही है। शैव, वैष्णव और शाक्त मतावलंबियों के सैकड़ों श्रद्धा केन्द्र उत्तर प्रदेश में स्थित हैं। विशिष्ट मान्यता वाले दर्जनों श्रद्धा केन्द्र बहुत शांत एकांत और दुर्गम स्थानों पर स्थित होने के कारण जन सामान्य के लिए दुर्लभ थे। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार बनने के बाद इन दुर्गम स्थानों के लिए संबद्धता और सुगमता बढ़ी है। आवागमन और यातायात की सुविधाएं बढ़ी हैं। संचार सुविधाओं का विस्तार हुआ है और सबसे खास बात यह हुई है कि इन श्रद्धा केन्द्रों को, सुन्दरीकरण और जनसुविधाओं से लैस करके उन्हें आकर्षण का भी केन्द्र बना दिया है। और जब से श्रद्धा केन्द्र आकर्षण का भी केन्द्र बने हैं तबसे वह पर्यटन केंद्र भी हो गये हैं। जब से श्रद्धा केन्द्र पर्यटन केन्द्र बन गये हैं तभी से उतर प्रदेश में पर्यटन विभाग पर्यटन उद्योग के रूप में तब्दील होकर रोज़गार और स्वरोज़गार उपलब्ध करा रहा है। अब तो उत्तर प्रदेश में पर्यटन को व्यवसायिक स्वरूप देकर उसकी ब्रांडिंग की भी व्यवस्था कर दी गई है। इसी प्रगति के

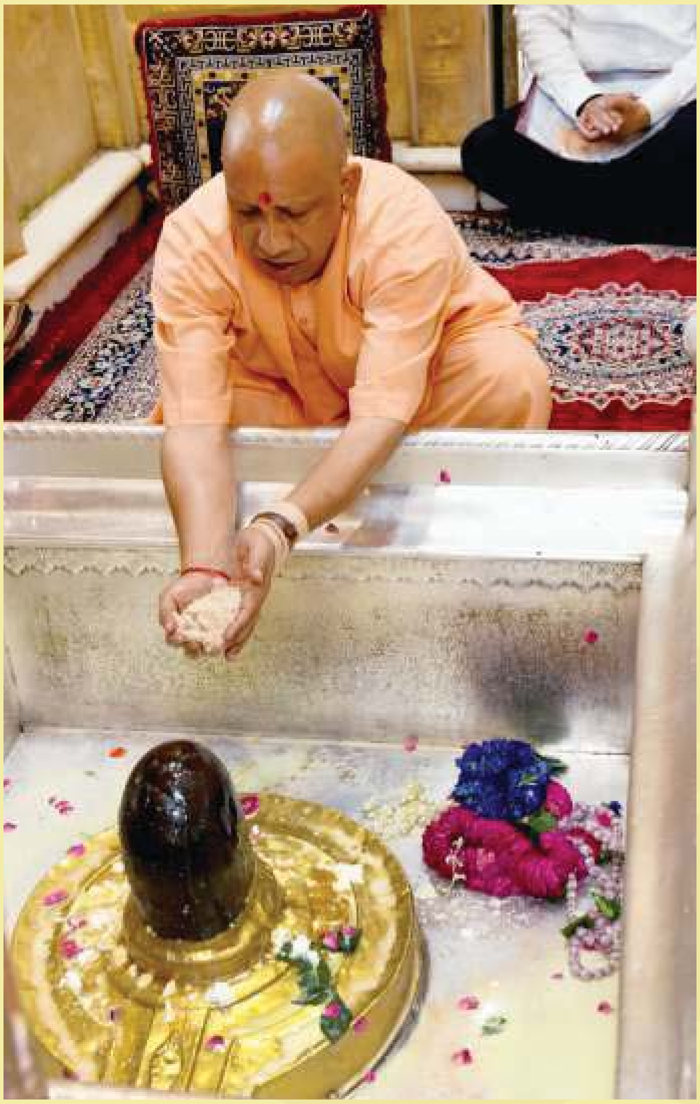

साथ अब पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बन गया है।

अभी हाल में ही पर्यटन विभाग ने आईआईएम लखनऊ द्वारा संचालित सेंटर फॉर मार्केटिंग इन इमर्जिंग इकोनॉमीज (सीएमईई) में 'डेस्टिनेशन इमेज पर्सेप्शन' विषय पर एक शोध भी कराया है। इस शोध परियोजना के पूरा करने में मार्केट एक्सेल रिसर्च एजेंसी से भी सहयोग लिया गया।

अध्ययन में उत्तर प्रदेश के विविध पर्यटन स्थलों की ब्रांडिंग और मार्केटिंग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई हैं। इस शोध द्वारा प्राप्त जानकारियां उत्तर प्रदेश में पर्यटन के भविष्य को आकार देने में बहुमूल्य साबित होगा।

उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह बताते हैं कि हम स्वच्छता, बेहतर परिवहन सुविधाओं और बजट अनुकूल आवास पर ध्यान केंद्रित कर पर्यटन उद्योग को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश 'पर्यटन का गढ़' बनकर उभरा है, जिसमें बेहतर बुनियादी ढांचा, कनेक्टिविटी और सुविधाएं हैं। यूपी अपने 12 पर्यटन सर्किटों के साथ पर्यटकों को यह अवसर प्रदान करता है कि वे अपनी इच्छानुसार गंतव्य का चयन कर सकें। सरकार का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है, कि हर पर्यटक/आगंतुक सुखद अनुभव और पुनः वापस आने की इच्छा लेकर जाए।

यह शोध, पर्यटन नीति 2022 के तहत किया गया है, जिसके तहत पर्यटन विभाग द्वारा 10 लाख रुपए की वित्तीय सहायता दी गई है। इसमें यात्रियों को उत्तर प्रदेश के प्रमुख गंतव्यों में भ्रमण के लिए प्रेरित करने वाली विशेषताओं के बारे में जागरूक करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों को सम्मिलित किया गया है। रिसर्च में घरेलू पर्यटन के गंतव्यों के चयन से संबंधित रुझानों को समझने का प्रयास किया गया है। शोध में पाया गया है कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म यात्रियों को भ्रमण के लिए प्रेरित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। उत्तर प्रदेश घूमने आए ज्यादातर पर्यटक प्रियजनों के साथ सुखद समय बिताने के लिए आते हैं, जिससे प्रदेश की एक ऐसी छवि बनती है जहां पर्यटक फैमिली फ्रेंडली टूरिज्म संभव है।

उत्तर प्रदेश का आगरा शहर ऐतिहासिक इमारतों के लिए प्रसिद्ध है। यहां बेहतर कनेक्टिविटी और सुविधाजनक यात्राओं के जरिए जल्द पहुंचा जा सकता है। मथुरा, वृंदावन, वाराणसी और प्रयागराज आगंतुकों को अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। यहां के धार्मिक स्थलों पर अपेक्षाकृत आसानी से पहुंचा जा सकता है। शोध में सामने आया कि, पर्यटक गंतव्य स्थलों के चयन में क्षेत्र के समृद्ध रीति–रिवाज, त्योहारों और धार्मिक गतिविधियों को प्राथमिकता पर रखते हैं, यही वजह है कि अयोध्या के प्रति आकर्षण तेज़ी से बढ़ा है। उत्तर प्रदेश विविधताओं से भरा

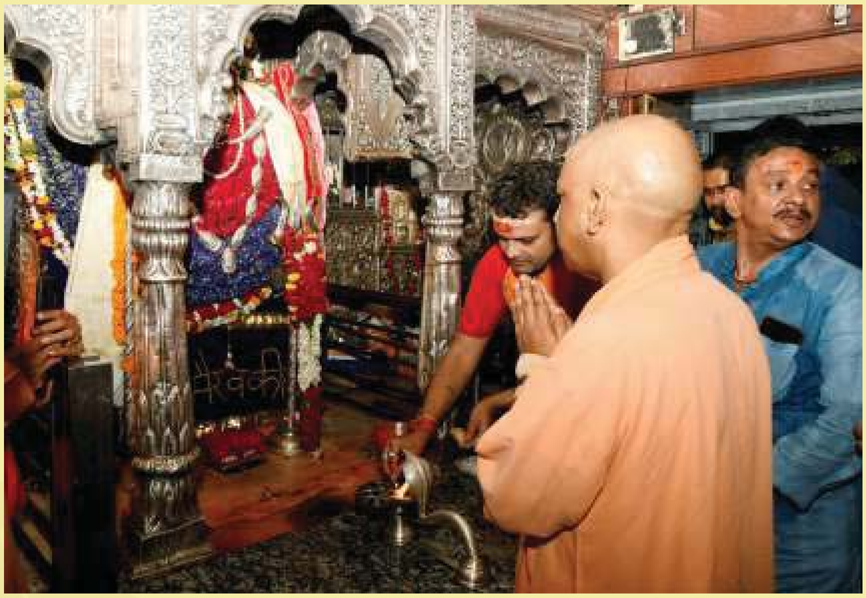

राज्य है जहां के प्रसिद्ध शहर कानपुर को कम पैसे में यात्रा करने के लिए आदर्श गंतव्य के रूप में देखा जाता है तो वहीं, वाराणसी 'लक्जरी डेस्टिनेशन' के रूप में अलग पहचान बना रहा है। लखनऊ अपने ऐतिहासिक स्मारकों, इमारतों के साथ–साथ प्रसिद्ध रेस्तरां के लिए जाना जाता है। लखनऊ में खान–पान की विविधता पर्यटकों को विशेष आकर्षित करती है। इसी तरह, महोबा जिले का चरखारी बेहतरीन जलवायु की वजह से पारिवार के साथ सैर के लिए लोगों की पहली पसंद बनकर उभरा है। झांसी अपने प्रतिष्ठित स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों के लिए विख्यात है, तो कौशाम्बी अपनी विशिष्टता के लिए जाना जाता है। बांदा जिला स्थित कालिंजर अपनी बेहतरीन सड़कों, परिवहन सेवाओं और गुणवत्तापूर्ण होटल के लिए चर्चित है। कुशीनगर को उसकी स्वच्छता, कम प्रदूषण और प्राचीन इतिहास के लिए सराहा जाता है।

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार बनने के बाद इन दुर्गम स्थानों के लिए संबद्धता और सुगमता बढ़ी है। आवागमन और यातायात की सुविधाएं बढ़ी हैं। संचार सुविधाओं का विस्तार हुआ है और सबसे खास बात यह हुई है कि इन श्रद्धा केन्द्रों को सुन्दरीकरण और जनसुविधाओं से लैस करके उन्हें आकर्षण का भी केन्द्र बना दिया है।

नवनिर्मित राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद से अयोध्या, उत्तर प्रदेश के सभी पर्यटन स्थलों में शीर्ष विकल्प के रूप में उभरा है। अयोध्या, पर्यटकों/श्रद्धालुओं के बीच आध्यात्मिकता, स्वच्छता, अद्वितीय धार्मिक स्थल के रूप में तेज़ी से स्थान बनाने में सफल रहा है। पर्यटकों को तीन अलग खंडों में बांटा गया है यथा–खोजकर्ता, परंपरावादी और अधिक यात्रा करने वाले प्रत्येक समूह एक अलग ट्रैवल विहेवियर को प्रदर्शित करता है, जिसमें या फिर कम प्रचलित स्थलों पर, प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण स्थलों पर एक निर्धारित बजट के अंतर्गत या ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुभवों को प्राथमिकता देना आदि शामिल है। उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री बताते हैं कि गंतव्य के चयन में महत्वपूर्ण कारक जैसे–विशिष्टता, सुविधा, आकर्षण और गंतव्यों की समग्र भावनात्मक अपील शामिल है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा प्राचीन स्थलों की विविधता उत्तर प्रदेश को प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करती है। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग मार्केटिंग स्ट्रेटजी को बढ़ाने के साथ समग्र पर्यटन अनुभव उपलब्ध कराने के लिए समर्पित है। साथ ही, यह भी सुनिश्चित करता है कि उत्तर प्रदेश दुनिया भर के आगंतुकों/पर्यटकों को बेहतर अनुभवों के साथ आकर्षित करने के प्रयास आगे भी जारी रखेगा।

इससे पूर्व देश की राजधानी दिल्ली में देशभर से पर्यटन मंत्रियों और पर्यटन प्रमुखों के जमावड़े में उत्तर प्रदेश की प्रस्तुति ने देशभर के सैलानियों का ध्यान आकर्षित किया। सरकार पर्यटन को व्यवसायिक रूप में विकसित करके न केवल समग्र भारत बल्कि सारी दुनिया का ध्यान और रुझान हासिल किया है।

अभी विगत दिनों उत्तर प्रदेश की मंत्रिपरिषद ने तीन दर्जन प्रस्ताव पारित किये जिसमें 7 प्रस्ताव पर्यटन विभाग

के थे। इन प्रस्तावों के अनुसार अयोध्या में टाटा संस द्वारा 650 करोड़ की लागत से मंदिर संग्रहालय बनाया जाएगा, और 100 करोड़ का अन्य विकास कार्य किया जाएगा, जिसमें पर्यटन विभाग 1 रुपए की लीज़ पर ज़मीन उपलब्ध करायेगा !!

उन्नाव के शाकंभरी देवी धाम की बड़ी ज़मीन पर पर्यटन विभाग विकास कराएगा !!

पर्यटन विभाग के बंद चल रहे आश्रय गृह को पीपीपी मॉडल पर 30 साल की लीज पर दिया जाएगा !!

जनपद लखनऊ, प्रयागराज, और कपिलवस्तु में पीपीपी मॉडल पर हैली पोर्ट बनाया जायेगा !! प्राचीन धरोहर बरसाना के जल महल मथुरा, शुक्ला तालाब कानपुर को पीपीपी मॉडल पर रीयूज करने का प्रस्ताव भी पास किया गया है। इसके अलावा कैबिनेट की बैठक में मुख्यमंत्री टूरिज्म फैलोशिप शुरू करने का प्रस्ताव भी पारित कर दिया है। मुख्यमंत्री फेलोशिप योजना,के तहत अभ्यर्थियों को टैबलेट उपलब्ध कराये जाने की योजना है। इसके अलावा गोरखपुर में परमहंस योगानंद की जन्मस्थली को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जायेगा, इसके लिए पर्यटन विभाग को मुफ्त ज़मीन दी जाएगी !!

राज्य में विगत 7 वर्षों में 4415.55 करोड़ रूपये की लागत से धार्मिक, आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों का विकास किया जा रहा है। सरकार राज्य में पर्यटन स्थलों का विकास को प्राथमिकता–दे रही है।

सांसदों, विधायकों एवं अन्य जनप्रतिनिधियों के प्रस्ताव पर पर्यटन विभाग द्वारा 4415.55 करोड़ रूपये की लागत से प्रदेश में स्थित आध्यात्मिक, पौराणिक एवं धार्मिक स्थलों का विकास किया जा रहा है। वर्ष 2017–18 से 2023–24 तक प्रमुख पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधायें सृजित की जा रही हैं। धार्मिक एवं अध्यात्मिक पर्यटन स्थलों पर देशी–विदेशी पर्यटकों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए राज्य सरकार पर्यटन सुविधाओं का प्राथमिकता से विस्तार कर रही है।

विगत वर्षों में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र से एक पर्यटन स्थल को विकसित किया गया है। पर्यटकों/श्रद्धालुओं के उपयोग के लिए पर्यटक सुविधा केन्द्र, यात्री निवास, शौचालय, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था, बेंच, परिक्रमा मार्ग पर स्थित पड़ाव स्थल तथा घाट का निर्माण आदि कराये जा रहे हैं। जनप्रतिनिधियों से प्राप्त प्रस्तावों के अंतर्गत जनपद अयोध्या में चौदह कोसी परिक्रमा मार्ग पर पर्यटक सुविधा की स्थापना 12.10 करोड़ रुपये से, जनपद अयोध्या में 14 धार्मिक पर्यटन स्थलों (ऋषि सरभ पनास मंदिर, सियाराम किला, दिगम्बर अखाड़ा, तुलसी चौराहा मंदिर, कौसल्या घाट मंदिर, कालेराम मंदिर, नेपाली मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वकर्मा मंदिर, छोटी देवकली मंदिर, मायूर मंदिर, भारत महल मंदिर, राम गुलेला मंदिर, हनुमान मंदिर) के फसाड ट्रीटमेन्ट एवं पर्यटन अवस्थापना सुविधाओं का कार्य 19.19 करोड़ रुपये से किया जा रहा है।

इसी प्रकार जनपद अयोध्या में चौरासी कोसी परिक्रमा मार्ग स्थित कुंडों का पर्यटन विकास/निर्माण कार्य

17.72 करोड़ रुपये से, चौदह कोसी परिक्रमा मार्ग स्थित पर्यटन स्थलों का पर्यटन विकास/निर्माण कार्य 18.29 करोड़ रुपये से, चौरासी कोसी परिक्रमा मार्ग स्थित पर्यटन स्थलों (आश्रम) का पर्यटन विकास/निर्माण कार्य 17.56 करोड़ रुपये से, पंचकोसी परिक्रमा मार्ग स्थित पर्यटन स्थलों का पर्यटन विकास/निमार्ण कार्य। 18.67 करोड़ रुपये से, अयोध्या में ही 16 धामिर्क पर्यटन स्थलों (करतलिया बाबा मंदिर, तिवारी मंदिर, वेद मंदिर, सिंघम मंदिर, गारापुर मंदिर, मनीराम दास की छावनी मंदिर, बरेली मंदिर, रंग महल मंदिर, सीताराम महल मंदिर, मोतिहारी मंदिर, टेढ़ी याती महादेव मंदिर, राम पुस्तकालय मंदिर, विद्या देवी मंदिर, देवीकाली कुण्ड, श्री सरोवर मंदिर, धन्याक्ष्य कुण्ड) के फसाड ट्रीटमेन्ट एवं पर्यटन अवस्थापना सुविधाओं का कार्य 34.10 करोड़ से कराया जा रहा है।

प्रदेश के पर्यटन मंत्री के अनुसार जनपद प्रयागराज की सदर तहसील के बालसन चौराहा स्थित महर्षि भारद्वाज आश्रम का पर्यटन विकास 13.35 करोड़ से, प्रयागराज के ही श्रृंगवेरपुर धाम में निषादराज पार्क का पर्यटन विकास 42.51 करोड़ रुपये से, जनपद मीरजापुर में विन्ध्य कॉरीडोर का निर्माण 128.95 करोड़ रुपये से, जनपद सीतापुर स्थित नैमिषारण्य में ललिता देवी मंदिर के निकट तीर्थयात्री सुविधा एवं कॉरीडोर का निर्माण। 47.96 करोड़ से, जनपद वाराणसी में ओवरआल टूरिज्म डेवलपमेंट के अन्तर्गत पंचकोसी परिक्रमा यात्रा पड़ाव का पर्यटन विकास 41.20 करोड़ रुपये से। वाराणसी में ओवर ऑल टूरिज्म डेवलपमेंट योजना के अन्तर्गत 24.32 करोड़ रुपये से, मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मस्थान पर साउण्ड एवं लाइट शो तथा दर्शकों के बैठने

हेतु स्थान का निमार्ण 15.86 करोड़ रुपये से किया जा रहा है।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि मथुरा के अन्तर्गत बरसाना परिक्रमा मार्ग का विकास कार्य 18.73 करोड़ रुपये से, जनपद मथुरा में वासुदेव वाटिका का निर्माण एवं विकास कार्य 45.33 करोड़ और मथुरा परिक्रमा के विकास एवं सुदृढ़ीकरण 18.89 करोड़ रुपये से, सहारनपुर के शाकुम्भरी देवी शक्तिपीठ में पदयात्रा मार्ग का सुदृढ़ीकरण एवं पर्यटन सुविधाओं का विकास कार्य 16 करोड़ रुपये से। सहारनपुर के शाकुम्भरी देवी शक्तिपीठ में टीएफसी का निर्माण 22.16 करोड़ और पार्किंग का निर्माण 18 करोड़ रुपये से, मुजफ्फरनगर के शुक्रतीर्थ धाम में गंगा घाट का उच्चीकरण 19.90 करोड़, टीएफसी एवं पार्किंग का निर्माण कार्य 21.24 करोड़ से, जनपद हापुड़ के ब्रजघाट गढमुक्तेश्वर का समेकित पर्यटन सुविधाओं का सृजन एवं पर्यटन विकास कार्य 13.15 करोड़ रुपये से और टीएफसी मल्टीकल्चरल हब का पर्यटन विकास कार्य 22.53 करोड़ से कराया जा रहा है। इसी प्रकार हापुड़ के वीआईपी घाट पर पर्यटन अवस्थापना सुविधाओं का सृजन 11.35 करोड़ रुपये से, जनपद चित्रकूट में तुलसीदास जी की जन्मस्थली राजापुर का समग्र पर्यटन विकास 20.89 करोड़ रुपये से, चित्रकूट स्थित रामघाट का सांस्कृतिक कायाकल्प, चौड़ीकरण एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य 24.10 करोड़ रुपये से किया जा रहा है।

अयोध्या में सभी प्रमुख स्थलों पर साइनेज लगवाने, 9 करोड़ रुपये की लागत सरयू तट पर शिल्पकला एवं फाउंटेन व सौंदर्यीकरण कराने का कार्य। आचार्य नरेंद्र देव विवि के परिक्षेत्र में स्थित गुलाबबाड़ी का सौंदर्यीकरण, राम की पैड़ी कैनाल से एनएच–27 तक सोतिया नाला का निर्माण। मणि पर्वत के चारों तरफ एएसआई क्षेत्र छोड़ कर पाथवे का निर्माण। फ्लोरिंग, बेंच, साइनेज, लाइट एवं लेजर, पारदर्शी स्क्रीन, फूड क्योस्क के निर्माण की योजना है।

राज्य सरकार धार्मिक पर्यटन के विकास' पर ज्यादा जोर दे रही है उसमें भी अयोध्या, प्रयागराज और वाराणसी को विषेश प्राथमिकता दी जा रही है। अयोध्या में 32 हजार करोड़ की परियोजनाओं पर काम चल रहा है।

भले ही अयोध्या में मां सरयू प्रवाहमान हैं, लेकिन नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ सरकार रामनगरी में विकास की गंगा का अवतरण कराने में कोई कमी नहीं छोड़ रही है। हाल ही में गठित अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद भी योजनाओं का पिटारा खोलने जा रहा है। सब कुछ ठीक ठाक रहा तो जल्द मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बैठक कर 110 करोड़ की योजनाओं को हरी झंडी दे सकते हैं।

रामनगरी में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक बार फिर से कई योजनाओं पर काम शुरू होने जा रहा है। श्री अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद के पास 11 प्रोजेक्ट भेजे गए हैं। ज्ञातव्य है कि अयोध्या में 32 हजार करोड़ की परियोजनाओं पर काम चल रहा है। अब कुछ नई योजनाओं पर काम शुरू करने तैयारी हो रही है। रामनगरी की पौराणिकता की गवाह मणिपर्वत का भी सौंदर्यीकरण कराया जाएगा। मणिपर्वत भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित है। यहां हर साल सावन माह में मेला लगता है। रामनगरी में झूलनोत्सव का शुभारंभ मणिपर्वत मेले के साथ ही होता है।

श्री अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद के सीईओ संतोष कुमार शर्मा ने बताया कि अयोध्या के नियोजित विकास के लिए विभिन्न विभागों की विकास योजनाओं के प्रस्ताव तीर्थ विकास परिषद को मिले हैं। अयोध्या विकास प्राधिकरण के 8 और उत्तर प्रदेश पर्यटन विकास निगम के 3 प्रस्ताव हैं। इन सभी योजनाओं की कुल कीमत करीब 110

करोड़ होगी। इन योजनाओं के मूर्त रूप लेने से रामनगरी में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

अयोध्या में सभी प्रमुख स्थलों पर साइनेज लगवाने, 9 करोड़ रुपये की लागत सरयू तट पर शिल्पकला एवं फाउंटेन व सौंदर्यीकरण कराने का कार्य। आचार्य नरेंद्र देव विवि के परिक्षेत्र में स्थित गुलाबबाड़ी का सौंदर्यीकरण, राम की पैड़ी कैनाल से एनएच–27 तक सोतिया नाला का निर्माण। मणि पर्वत के चारों तरफ एएसआई क्षेत्र छोड़ कर पाथवे का निर्माण। फ्लोरिंग, बेच, साइनेज, लाइट एवं लेजर, पारदर्शी स्क्रीन, फूड क्योस्क के निर्माण की योजना है।

अयोध्या के विभिन्न स्थलों का सौंदर्यीकरण। यात्रियों के रुकने व विश्राम की व्यवस्था, अयोध्या के कौशलेश सदन के जीर्णोद्धार व सुंदरीकरण संत निवास का जीर्णोद्धार व सुंदरीकरण का कार्य प्रस्तावित है। सरकार अयोध्या मथुरा और काशी में पर्यटक स्थलों को विकास के लिए पर्याप्त धनराशि खर्च करने को तैयार है।

मथुरा के 'बरसाना में श्रद्धालुओं के लिए भी सरकार रोप वे की बड़ी सौगात'देने जा रही है। यह उत्तर प्रदेष का तीसरा और पश्चिमी यूपी का पहला रोप वे होगा। 'चित्रकूट और विध्यांचल के बाद अब बरसाना में भी श्रद्धालु' उड़न खटोले का आनंद ले सकेंगे।

'अब 350 सीढियां नहीं चढ़नी होगी.. अब सीधे रोप वे की मदद से होंगे दर्शन' श्रद्धालु अब 'महज 7 मिनट में ब्रम्हांचल पर्वत पर विराजमान श्रीजी के मंदिर में पहुंच जाएंगे'। 210 मीटर लंबे इस रोप वे'के निर्माण पर लगभग 25 करोड़ की लागत आई है सरकार लगातार ब्रज में पर्यटन सुविधाओं में इजाफा'कर रही है। वाराणसी' गत वर्ष में पूर्वांचल का टॉप धार्मिक व टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया जबकि विंध्याचल दूसरी, अष्टभुजा धाम तीसरी, भदोही का सीतामढ़ी चौथी व सोनभद्र पर्यटकों की बना पांचवी पसंद'।

वाराणसी में –8,54,73,633, सोनभद्र में 22,26,310 पर्यटकों का आगमन हुआ।''वाराणसी में आने वाले पर्यटकों को पड़ोसी जिलों के आध्यात्मिक, धार्मिक और प्राकृतिक स्थल भी खूब भा रहे है' 'विकास के कार्यों, मूलभूत ढांचा में सुधार, सुरक्षा और दूसरे शहरों से बेहतर कनेक्टिविटी ने पर्यटकों की राह आसान कर दी है।

'योगी सरकार ने काशी के कलेवर को बदलकर उसे विश्व में जो नई पहचान दिलाई है उसका लाभ वाराणसी समेत आसपास के अन्य जिलों को भी मिल रहा है। वाराणसी में आने वाले पर्यटक पड़ोसी जिलों के आध्यात्मिक, धार्मिक और प्राकृतिक स्थलों को भी पसंद कर रहे हैं। वर्ष 2023 में पूर्वांचल का टॉप रिलीजियस व टूरिस्ट डेस्टिनेशन वाराणसी रहा। वहीं, दूसरे नंबर पर मिर्ज़ापुर का विंध्याचल तीसरे पायदान पर और मिर्ज़ापुर का ही अष्टभुजा मंदिर रहा। इसके अतिरिक्त, संत रविदास नगर (भदोही) में स्थित सीतामढ़ी चौथे नंबर पर और प्राकृतिक सौंदर्य से भरा सोनभद्र पांचवे स्थान पर रहा। सरकार ने बनारस और उसके आस–पास के जिलों की कनेक्टिविटी में इजाफा करने के साथ इन क्षेत्रों में पर्यटन विकास की विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया है जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं और पर्यटक कम समय में ज्यादा से ज्यादा पहुँच रहे है।

'विकास के कार्यों ने बढ़ाया पर्यटकों का रुझान'–पर्यटन विभाग के डिप्टी डायरेक्टर राजेंद्र कुमार रावत कहते हैं कि वाराणसी में हुए विकास के कार्यों, मूलभूत ढांचा में सुधार, दूसरे शहरों से बेहतर कनेक्टिविटी, सुगमता और सुरक्षा ने पर्यटकों की संख्या बढ़ा दी है। वाराणसी के पडोसी जिलों के पर्यटन और धार्मिक स्थलों के विकास के काम ने पर्यटकों का रुझान बढ़ाया है। वाराणसी के आस–पास 100 से 200 किलोमीटर की यात्रा पर्यटकों के लिए काफी आसान हो गई है। वाराणसी आने वाले पर्यटकों को संतरविदास नगर (भदोही), मिर्ज़ापुर ,सोनभद्र के धार्मिक स्थलों, जलप्रपात और प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थल खूब भा रहे है। इसी का परिणाम है कि 1–वाराणसी–8,54,73,633 2–विंध्याचल –72,97,8003 –अष्टभुजा –42,35,770 4–सीतामढ़ी –25,41,080 5 –सोनभद्र –22,26 310 पर्यटकों की आमद हुई। ◆

मो. : 9415757822

खुशियों का उपहार

डबल इंजन की सरकार

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत

₹1,890 करोड़ से 1.86 करोड़ परिवारों को

दीपावली एवं होली पर

नि:शुल्क एलपीजी सिलेण्डर रिफिल की सौगात

- महिलाओं को धुएं से मिली आजादी, पर्यावरण सुधार की ओर सार्थक कदम।
- प्रथम चरण में आधार प्रमाणित लाभार्थियों को दीपावली के अवसर पर अक्टूबर से दिसंबर, 2024 तक नि:शुल्क एलपीजी सिलेण्डर रिफिल का वितरण।
- लाभार्थियों को 14.2 किग्रा का सिलेण्डर रिफिल दिया जाएगा।
- सिलेण्डर पर मिलने वाली सब्सिडी लाभार्थियों के आधार प्रमाणित खाते में अंतरित की जाएगी।
- योजना के अंतर्गत लाभार्थी को एक कनेक्शन पर नि:शुल्क एलपीजी सिलेण्डर रिफिल का लाभ मिलेगा।
- द्वितीय चरण में होली के अवसर पर जनवरी से मार्च, 2025 तक नि:शुल्क एलपीजी सिलेण्डर रिफिल का वितरण किया जाएगा।

खाद्य एवं रसद विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP | सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

वेबसाइट
https://kumbh.gov.in/

मोबाइल ऐप
Mahakumbhmela 2025

आओ चलें महाकुम्भ

13 जनवरी, पौष पूर्णिमा से
26 फरवरी, महाशिवरात्रि तक

मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के साक्षी बनें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित एवं प्रभारी सम्पादक : दिनेश कुमार गुप्ता